आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत
विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 05 | उदयपुर गुरूवार 15 मार्च 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कद आवोळा रमैया मोरे गाम

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

किस्सा तब का है जब रामचंद्र भगवान, माता जानकी और लक्ष्मण वीर चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या लौट रहे थे। देश-देशांतर के लोग अयोध्या पहुंचे और खुशी में फूले नहीं समाये। इन सबमें वे आदिवासी भी थे जिन्होंने वनांचलों में भगवान राम की जितनी बन आई, सेवा-सुश्रुषा की, सान्निध्य लिया और अपने जीवन को धन्य किया। अयोध्या का हर घर, गली, मार्ग, चौराहा, महल, मालिया, छाजा, कंगूरा अनंत-अनंत दीपकों की रोशनी से जगमगा उठा और वहां उपस्थित हर दिल ज्योति की जगमगाहट से अंतर-बाहर ज्योतिर्धर हो गया।

कहते हैं, ऐसी दीपकों की दिव्य-ज्योति सर्वत्र पूरे देश में की गई और तब से ही दीपावली का त्यौहार प्रारंभ हो गया, जो अब तक भी उसी श्रद्धा-भावना तथा आस्था-उमड़ाव का प्रतीक बना हुआ है। रामजी की अगवानी में राम के भक्तों ने अयोध्या में अपनी उपस्थिति से रामदर्शन के प्रमाणस्वरूप राम-रज और उनकी अनुपस्थिति में राजपाट संभालने वाली उनकी खड़ाऊ का धोवन-पानी प्राप्त किया। अयोध्या से लौटकर भक्तों ने जहां-जहां राम-रज डाली, वहां कालांतर में गेरु रंग की एक विशाल खान बन गई और जहां खड़ाऊ के धोवन का छींटा गिरा, वहां श्वेत-धवल खड़ी की खान निकली।

मेवाड़ में गेरु रंग की मिट्टी और डलों के रूप में जो खान-संपदा मिलती है, उस राम-रजी माटी को हड़मची कहते हैं। दरअसल उस राम-रज को प्राप्त करने की जो हठ-होड़ मची थी, वही हड़मची के रूप में आंचलिक पहचान बनी हुई है।

यही स्थिति खड़ी अर्थात् खड़िया मिट्टी की है। दीपावली पर हर घर की सफाई के उपरांत हड़मची के घोल की लिंपाई कर आंगन में खड़ी से भांति-भांति के मांडने मांडे जाते हैं। इन मांडनों में चौक और आंगन की सज्जा के प्रतीक बड़े ही आकर्षक तथा मनमोहक सुहावनी भांतों के मांडनों के साथ-साथ रामजी की खड़ाऊ के रूप में पगल्याजी की दर्शना देते मांडनों की मुलकान राम-रंजन की सौगात देती है।

राम-पधारन का अयोध्या में विविध रूपों में मंगलाचार हो रहा है। एक हरजस में सियावर की जै-जैकार के साथ उन्हें बधाने का मंगलाचार गाया जाता है जिसमें कहा गया है- आज का दिन बड़े ही आनंद का है।

अयोध्या में राम-लक्ष्मण-जानकी का पधारना हो रहा है। उनके मंगल गायन पर सोने-चांदी की ईंटों से नवखंड वाला महल बनवाओ। सोने-चांदी के कलश से उनकी आरती करो। रघुवर को कत्था-चूना लगा हुआ पान चबाने को दो। सोने की थाली में उन्हें भोजन कराओ। सोने की झारी में गंगाजल पिलाओ। सोने की थाल में रत्नजड़ित पासे से उन्हें खेलाओ। हिंगलू के ढोलिये पर फूलों की सेज सजाकर उन्हें पोढ़ाओ। आज का दिन बड़े आनंद का है। अयोध्या में राम का पदार्पण हो रहा है।

भारतीय पट्ट चित्रों की परंपरा में कपड़े पर विशेष विधि से जो चित्र मांडे जाकर विशिष्ट वाचकों द्वारा ग्राम्य-जीवन में जो मनौतीमूलक रंजन किया जाता है, वह चित्रफलक, पड़ अथवा फड़ नाम से लोकप्रिय है। इनमें देवनारायण तथा पाबूजी की पड़ों ने पूरे विश्व में ख्याति अर्जित की है। इन पड़ों के अलावा उनके अत्यंत लघु रूप में जो पड़क्या प्रसिद्धि लिए है, उसे रामदला नाम से जाना जाता है। इसके प्रचलित अन्य नामों में 'भगवान का चंदोवा' तथा 'रामदला का पाटिया' है।

कावड़ का प्रारंभिक रूप रामजीवन की चित्रात्मक गाथा का वाचन-श्रवण ही था। इसीलिए उसे 'रामजी की कावड़' कहा गया। वाचक कावड़िया भाट कावड़ को बड़े यत्न से लाल कपड़े में बांधे रखता है और सुनाते समय पवित्र तन-मन से जमीन पर आसन लगाकर एक हाथ में, गोदी में थामे रहता है। दूसरे हाथ से पट चित्रित चित्रों को मयूरपंख का स्पर्श दिये विशिष्ट लहजे में प्रत्येक चित्र का अरथावण करता है। प्रारंभ में उसी लहजे में अपने गाम-नाम का परिचय देता कावड़ वाचन प्रारंभ करता है। पूरी कावड़ में लगभग सौ के करीब चित्र होते हैं। इन चित्रों से कई तरह की जानकारी मिलती है।

फसल पकाई पर जब मक्की के पौधे में मांजर-मूंछ का गुच्छा भुट्टे के सिर पर चोटी की तरह पत्तों के आवरण से बाहर निकलने को होता है, तब धीरे-धीरे श्वेत मूंछें कच्चेपन की कंचुकी छोड़ पक्केपन की प्रतीक रूप में भूरापन लेती हुई काली यानी गहरी भूरी दिखने लग जाती है। यह स्थिति भुट्टे में दाने आकर उसके पकने की स्थिति का दरसाव होता है। ऐसी स्थिति में कुछ भुट्टे उसके डंठल से अलग कर रामजी के नाम रख दिये जाकर या तो किसी देवरे में चढ़ा दिये जाते हैं या फिर किसी साधु-तपसी को दे दिये जाते हैं। यही स्थिति ज्वार के कण भरे हुए गुच्छे की होती है जिसे पेंकड़ा कहा जाता है। कोई भी फसल पकने पर पहली बार उसे राम के नाम खेत से निकाल स्वयं उपभोग नहीं करते हैं बल्कि धर्मार्थ अन्यों के लिए निकालते हैं। गेहूं, मक्की, ज्वार, बाजरा, चीणा जैसी फसल का आंशिक हिस्सा उसके मूल डंठल सहित खेत में ही खड़ा छोड़ देते हैं ताकि कोई भी चीड़ा-चीड़ी उसे अपना चुग्गा बना सके।

सबका रखवाला राम है- 'राम राखे एने कोण मारे।' उम्र के अनुसार रामली, रामीबाई, रामी भाभी, रामा भाभा, राम्या, रामल्या, नानोरामो, रामलाल, रामलला, रामशंकर, राम बा, रामरसिया जैसे नामों से कोई गांव अछूता नहीं मिलेगा।

कहना नहीं होगा कि राजस्थानी आदिवासी जीवन संस्कृति और कला के किसी पक्ष का छुअन अथवा स्पर्श भगवान राम के बिना अधूरा है। कोई त्यौहार, उत्सव अथवा उमंग का अवसर हो, घर की लिंपाई-पुताई-सफाई हो, पशुओं को सजाने-संवारने का मौका हो ; राम का नाम, राम के छप्पे, छापे और राम भगवान से सम्बद्ध मांडणे, थापे मुलकाते मिलेंगे। राम-रज हड़मची घर-बाहर की शोभा ही नहीं बनती, गायों, बैलों के सींग और शरीर तक उसके रंग-थापों से रंगे-थपे जाकर शोभित होते हैं।

भगवान राम के साथ इधर प्रत्येक आदिवासी गर्व करता है कि उन्होंने शबरी के घर मेहमानी की और उनके हाथ का बोर खाया। मेवाड़ में दो तरह के बोर मिलते हैं। एक तो पेमली बोर जो कि किंचित् हरापन लिये होता है और दूसरा चणबोर जो पकने पर लाल होता है और छोटे आकार की कांटेदार झाड़ियों में लगता है। यह ऊंची जमीन और सूखे स्थानों पर बहुतायत में मिलता है। दीपावली पूजन पर मिट्टी के दीयों में शुभ-मंगल के प्रतीकार्थ चणबोर भी तेल को तरी देता है।

शबरी की तरह हर आदिवासी महिला मेलों-ठेलों या अन्यत्र उल्लास के अवसरों पर जब समूह रूप में गाती-नाचती-ठुमकती एकत्र होती हैं तो रामजी के रूप में अपने गांव में रमैया का आह्वान कर फूली नहीं समाती है-

कद आवोळा रमैया मोरे गाम
ऊबी जोऊं बाटड़ली

अर्थात् मेरे गांव कब आओगे रमैया! मैं खड़ी-खड़ी तुम्हारी बाट जो रही हूं।

अनावृष्टि में सब ओर सूखा ही सूखा हो जाता है। वनराई की हरीतमा टाटली हो जाती है। दुधारु पशुओं का दूध सूख जाता है। धरती धूजा मारने लगती है। लोग दाने-दाने को मोहताज हो जाते हैं, तब लगता है राम ने रूठा मान लिया है।

ऐसी स्थिति में गांव के किसी राम नामधारी रामधनिया, रामरखिया, रामलछिया, रामरूणिया अथवा रामरसिया को पंच-पंचायती में बुलाकर पंचायती ढोल का डाका दिलाया जाता है। तब अतिवृष्टि का पानी संयत हो जाता है और अनावृष्टि में रिमझिम-रिमझिम बरसात होने लगती है। यही राम नाम की सार्थकता है।

सच तो यह है कि राम की ही पकड़ में पूरा पर्यावरण है। हवा, रोशनी, अगन, पानी, वनस्पति सबमें उसकी आतम बसी हुई है। सारे उसके इशारे में खूंटी बंध हैं। वही रसवटी है। वही रसायन है। रसखान है। उसकी मुट्ठी में अकाश कैद है।

उसके पांवों में पृथिमी परिचालित है। उसकी हवाखोरी में सबकी सांसें हिंडोले ले रही हैं। उसकी अगन में सभी तपसी बने हुए हैं। उसके जल में सब जलजात बन खिलखिला रहे हैं। वही एक है। अनेकों में एक और एक में अनेकानेक।

गणगौर पूजा के विविध फल-शकुन

-डॉ. तुक्तक भानावत-

कोई भी व्रत-त्यौहार हो उसके पीछे परम्पराएं व लोकमान्यताएं अत्यधिक प्रभावी होती हैं। गणगौर जहां महिलाओं को सौभाग्यवती बनाये रखती है वहीं कुमारिकाओं को श्रेष्ठ पति पाने का शकुन देती हैं। साथ ही विवाह में हो रही देरी के चून्दड़ी मंगल तथा पगड़ी मंगल के दोष का निवारण करती है। राजस्थान में काष्ठकला की दृष्टि से बसी काष्ठ शिल्पियों का बड़ा नाम है।

यहां के मांगीलाल मिस्त्री तथा सायर देवी ने बताया कि मेवाड़ में गणगौर उत्सव की विशेष मान्यता है। यहां तक कि भिन्न-भिन्न लकड़ियों से बनने वाली गणगौर का फल भी अलग-अलग मिलता है। यों प्राय: खिरनी की लकड़ी से गणगौर बनाई जाती है पर विशिष्ट अनुष्ठानों के लिए आसापाल, चन्दन, आम, नीम, सालर, सेमला, सीसम, सागौन की लकड़ी से भी बनवाते हैं। आसापाल की गणगौर आशापूर्ण करने वाली कही जाती है। चन्दनिया गणगौर लाल व सफेद चन्दन के गुण के अनुसार फल देती है। लोकमान्यताओं के अनुसार गणगौर की प्रतिमाएं हमेशा सवाये माप से बनाई जाती है। यथा- सवा पांच इंच, सवा फीट, सवा पांच फीट। सवाया सदा ही शुभ माना जाता है।

इसी तरह रंगों का विधान है। जैसे हिरमिच, पीला, केसुला के फूल का रंग, गौमूत्र मिलाकर तैयार किया जाता है। सिन्दूर के साथ ही दीपक के काजल से काला, रिजका के रंग से हरा रंग, नील के पौधे से नीला और खड़िया पत्थर से सफेद रंग बनाया जाता है।

सायरदेवी ने बताया कि जिन बालिकाओं के विवाह में विलम्ब होने की समस्याएं होती हैं उन्हें वे आसापाल की गणगौर पूजने की सलाह देते हैं। कहावत भी है- 'कुंवारी पूजै, वर घर आवै, परणी पूजै पूत खेलावै।

-शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (48) : डॉ. महेन्द्र भानावत

एक अनोखे किन्तु अच्छे दोस्त डॉ. विश्वंभर व्यास

डॉ. विश्वंभर व्यास एक खड़ स्वभाव के उखड़े व्यक्ति ही थे। एम.ए. की पढ़ाई के दौरान मेरी उनसे मैत्री बनी जो अन्त तक रही। इसका अचम्भा कई लोगों के साथ मुझ में भी बना रहा। वे हिन्दी के प्राध्यापक थे मगर अपने साथ हर समय अंग्रेजी के मेगजीन रखते और सदैव ब्रांडेड कपड़ों में चुस्त दुरस्त रहते।

हम सब लोग जो उनके मित्र थे, उन्हें वे देशी मिजाज के लफड़दोंदू ही मानते। उनका पठन-पाठन भी चुस्त दुरुस्त रहता। कई तरह की जानकारी रखते लेकिन मित्रों से जब किसी बात पर सहमति नहीं होती तो वे उलझते और अपना मंतव्य प्रकट करने में तनिक भी संकोच नहीं करते।

यहां तक कि नंद चतुर्वेदी जैसे प्रखर पंडित से भी कभी-कभी अकारण उलझते भी मैंने देखा लेकिन तब भी हमारा याराना व्यासजी के साथ बना रहता। यहां तक कि जब कभी हमें किसी समारोह में बाहर जाना पड़ता तो हम सबसे पहले अपनी संगत में साथ निभानेवाले विश्वंभर व्यास को याद करते और उनकी बड़ाई यह रहती कि वे हर समय तैयार हो हमें पूरी कंपनी देते।

मुझे उदयपुर-चित्तौड़ की धर्मशालाओं पर धर्मयुग के लिए एक आलेख तैयार करना था सो मैं डॉ. व्यास को लेकर चित्तौड़ गया। दो घंटे में हमारा काम हो गया तब एक चाय के होटल में गये। चाय पीकर डॉ. व्यास ने कहा, 'भानावतजी, आपके साथ रहकर मुझे बहुत समय हो गया। अब मैं आपसे अलग होना चाहूंगा सो यदि आप बस से जाना चाहें तो मैं ट्रेन से और यदि आप ट्रेन से जाना चाहें तो मैं बस से जाना चाहूंगा।'

मैं उनकी बात सुन अकपका गया। बोला, 'ऐसी बात क्यों करते हो, अब जाना ही है तो प्रेम से चलेंगे। कुछ और साथ में रहना हो जायेगा।' वे बोले, 'नहीं, नहीं बहुत हो गया। अब आपके साथ रहने में मेरी कोई रूचि नहीं रही।' मैंने कहा, 'रूचि तो बनाने से बन जायेगी। मैं तो आपको लाया ही इसीलिए कि अकेले में भटकते रहने का क्या आनंद। यदि ऐसा होता तो मैं अकेला ही चला आता।'

पर वे माने नहीं सो मुझे रेलवे स्टेशन छोड़ आये। मैं कुछ देर तो इधर-उधर टापता रहा फिर अकेलेपन से मेरा मन उचट गया। अत: मैं बस स्टेन्ड की ओर पैदल ही चल पड़ा। सामने से एक बस उदयपुर के लिए आती दिखी सो मैंने हाथ दिया। बस रूकी। मैं फाटक खोल चढ़ा तो सामने व्यासजी बैठे मिले। बोले- 'फिर यहां भी आप आ गये।' मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप पीछे की सीट पर बैठ गया। उदयपुर आकर दोनों ने अपना-अपना गंतव्य पकड़ा।

डॉ. विश्वंभर व्यास से मेरा ठीक से मिलना महाराणा भूपाल कॉलेज में हुआ जब मैं हिन्दी एम.ए. फाइनल में था और उन्होंने प्रीवियस में प्रवेश लिया था। कुछ क्लासें साथ में लगने से हमारी दोस्ती धीरे-धीरे गाढ़ी बनी। इसमें एक शंकर 'क्रन्दन' भी जुड़ गया जो तब अच्छे कवि के रूप में जाना जाता था। कविताएं मैं भी लिखता था। जब कॉलेज में काव्य प्रतियोगिता हुई तब मुझे प्रथम पुरस्कार मिलने पर अति हर्ष हुआ।

एम.ए. करने के बाद जब कॉलेज में पीएच.डी. रिसर्च प्रारंभ हुई तब मैंने तथा डॉ. व्यास ने साथ-साथ डॉ. रामगोपालजी शर्मा 'दिनेश' के निर्देशन में पीएच.डी. की और पहलीबार 1968 के प्रथम दीक्षान्त समारोह में साथ-साथ पीएच.डी. की उपाधि ली। मेरे शोध का विषय भीलों में प्रचलित गवरी नृत्यानुष्ठान था जबकि डॉ. व्यास ने रांघेव राघव के काव्य पर काम किया। तब सुखाड़िया विवि का नाम उदयपुर विवि था।

भूपाल नोबल्स कॉलेज में जब वे लेक्चरर बने तब वहां देवकर्णसिंह राठौड़ तथा डॉ. संग्रामसिंह कारोई हिन्दी पढ़ाते थे। दोनों कवि के रूप में पहचान लिये थे। मैं वहां अक्सर जाता रहता तब हम चारों में अच्छी-खासी घुटती थी। व्यासजी स्वभाव से ही अनोखे और निराले थे। अपनी बात को जोर से मजबूती देते वे अंग्रेजी में टर्र-फर्र करते। हम लोगों में वे ही बड़ी शान वाले अप्टूडेट लगते थे।

सन् 1935 में जन्मे व्यासजी की नौवीं में पढ़ते-पढ़ते शादी हो गई। यह उन्हें बिल्कुल नहीं जंची फलस्वरूप पिता का घर छोड़ने के साथ-साथ पत्नी भी छोड़ दी। हमें उनकी पारिवारिक स्थिति की तनिक भी कोई जानकारी थी। एक दिन देवकर्णजी ने मुझे पूछा कि डॉ. व्यास कहां रहते हैं तो मैंने कहा- मुझे नहीं पता।

वे बोले कि कल ही कोई सज्जन कॉलेज उनसे मिलने आये और पूछ बैठे। मैंने उन्हीं को व्यासजी का पता पूछने को कहा तो बोले कि उनसे यह सवाल करना टेढ़ी खीर है तब अवसर देख मैंने ही व्यासजी से पूछ लिया। इस पर वे झल्लाये और टूटता जवाब दिया- 'आपको मेरे घर से क्या लेना-देना। जो भी पूछे, कॉलेज का पता बता दीजिये।' मैं चुप हो गया। एकबार उनके पिता पुरुषोत्तमजी पूछते-पूछते मेरे घर आए। वे अच्छी ऊंची कदकाठी के बड़े ही सौम्य पुरुष लगे। मुझे बोले- 'कॉलेज से मुझे देवकर्णसिंहजी ने आपके पास भेजा है। मेरा लड़का विश्वंभर आपका अच्छा दोस्त है पर वह हमारे लिए तो ना-लायक ही सिद्ध हुआ है। वर्षों से उसने अपनी पत्नी को छोड़ रखी है जो बिचारी मेरे पास रह रही है और उसके जीवन निर्वाह के लिए एक ढींगला तक नहीं देता है।' उन्होंने गुस्से में अपने बेटे को बहुत बुरा-भला भी कहा। मैंने उन्हें संतोष देते कहा कि मैं बात करूंगा। आपने जो स्थिति बताई, मैं उससे नितांत अनभिज्ञ हूं।

समय देखकर एकदिन मैंने व्यासजी के सामने यह बात छेड़ दी। पूरी बात सुने बिना ही वे मुझ पर भभक पड़े। बोले- 'आपको मेरे निजी जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। अपनी मित्रता बनी रहे, यही काफी है।' मैंने देवकर्णजी से जब यह बात कही तो उन्हें भी अफसोस हुआ। बोले- 'हम तो उनकी प्रकृति से परिचित हैं इसलिए ऐसी कोई बात नहीं करते। आदमी ऐंडाबेंडा भी है और मजेदार भी पर अपनों के साथ वे कब उखड़ जायें, कुछ पता नहीं चलता।'

उदयपुर में तब मोटरसाइकिलें बहुत कम थीं। व्यासजी बड़े शौकीन मिजाज के थे। कपड़े-लत्ते, खान-पान, रहनी-सहनी सब उनके खाते में अप्टूडेट थे। उन्होंने भी मोटरसाइकिल खरीदी जो अन्त तक उनके साथ बनी रही। नई-नई गाड़ी वे मुझे बताने आए और बोले- 'बन्धु! इस गाड़ी से जयपुर आपको भी मेरे साथ चलना है। रास्ते में मौजमस्ती करते चलेंगे। अपने साथ हमीद भाई तथा उनका दोस्त सुलेमान भी होगा। सुलेमान का भाग्य देखो, एक लाटरी में उसके नाम मोटरसाइकिल निकली है।'

हमीद भाई मेवाड़ राज्य के सतरहवें उमराव के परिवार से थे। उनका अच्छा प्रिंटिंग प्रेस था जहां भारतीय लोककला मंडल के प्रकाशन मेरे द्वारा संपादित मासिक रंगायन और नंदजी द्वारा संपादित बिंदु त्रैमासिक का मुद्रण होता था सो सभी एक-दूसरे से घुलेमिले थे।

कभी-कभी सुलेमान और बिंदु से जुड़े डॉ. प्रकाश आतुर, डॉ. नवलकिशोर और डॉ. नेमनारायण जोशी के साथ हमारी लम्बी बैठक कई तरह की हलचलों में छविराम बनी रहती थी। हमारी जयपुर की यात्रा यादगार रही। रुकते-रुकते, खाते-पीते चले। गाड़ी चलाने वालों को दूरी की थकान लगी हो तो वे जानें। हम तो उड़नखटोले सा मजा लेते चलते रहे। जयपुर पहुंचने पर भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावतजी ने आश्चर्य किया और कहा, अब आ गये सो ठीक, जाते समय ट्रेन-बस पकड़ लो पर यह संभव नहीं था।

सन् 2000 में बाथरुम में फिसलने से डॉ. व्यास की टांग में फ्रेक्चर आया। तब सुना कि वे अपनी बुआ के वहां सहेलियों की बाड़ी के पास सहेलीनगर में हैं। नंदबाबू ने कहा, अपन को चलना चाहिये। रात हो चुकी थी फिर भी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते, पूछते-पूछते ठिकाने पहुंचे। भीतर व्यासजी ने पलंग से हिलकर हमें देखा और उदासी लेते हुए कहा, 'आप यहां क्यों आ गये?' हमें लगा जैसे व्यासजी की साता पूछने के लिए जाना भी हमसे बड़ा अपराध हो गया। कुछ देर बैठे। उन्होंने जिस भाटाफोड़ अन्दाज में हमारी किरकिरी बनाई तब हमारा मौन रहना ही ठीक था। मुंह लटकाकर वहां से निकले। नंदबाबू बोले- 'बीमारी की हालत में तो ढंग से व्यवहार करता।' मैं बोला- 'पड़्या स्वभाव मर्‌यां-ई नीं मटै' अर्थात् कहावत है कि जिस स्वभाव में व्यक्ति ढल जाता है वह स्वभाव मरने पर भी नहीं मिटता। लेकिन व्यासजी दिलदार भी कम नहीं थे। कॉलेज के बाद वे मुझसे कभी कलामंडल में, कभी मेरे मंगल मुद्रण में, कभी नंदबाबू के घर, कभी चित्र-समीक्षक ए.एल. दमामी के निवास पर तो कभी किसी समारोह-सम्मेलन में मिलते रहते।

-शेष पृष्ठ सात पर

नागफनी का दंश लोकार्पित

भीलवाड़ा में रेखा लोढ़ा 'स्मित' की नागफनी का दंश नामक दोहा कृति का लोकार्पण किया गया। माया मृग ने कहा कि साहित्य फोटोग्राफी नहीं एक्सरे है। जो देखा उसका भीतर मंथन करके, उसे पका कर जो सृजन होता है वही सार्थक साहित्य बनता है।

मुख्य वक्ता डॉ. कमलाकान्त 'कमल' ने कहा कि रेखाजी द्वारा रचित पत्येक दोहा पाठक को बहस नहीं तर्क का धरातल प्रदान करता है। कृति में प्रकाशित 728 दोहों में प्रत्येक दोहा मुक्तामणि के बराबर है।

मुख्य अतिथि विट्ठल पारीक ने कहा कि नागफनी का दंश के दोहे अनुभूतिपरक हैं। जीवन की सच्चाई हैं। इस अवसर पर डॉ. कमलाकान्त 'कमल' को साहित्य शिखर सम्मान, राजेन्द्रगोपाल व्यास को काव्य शिखर सम्मान, नरेन्द्र दाधीच को गीत गौरव सम्मान तथा मुकेश शर्मा को ग़ज़ल गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। श्याम प्रकाश देवपुरा ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। प्रह्लाद पारीक ने संचालन किया।

द्वितीय सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। यशपाल शर्मा के संचालन में अध्यक्षता दयाराम मेठानी ने की। फतहसिंह लोढ़ा, सत्यनारायण व्यास 'मधुप' एवं श्यामसुंदर 'सुमन' ने मंचीय शोभा बढ़ाई। महासचिव वीरेन्द्र लोढ़ा तथा वत्सल लोढ़ा ने आभार व्यक्त किया।

गवरी पुस्तक का लोकार्पण

लोक की निकटता और विशालता को समझना गहन सागर में गहरे गोते लगाने जैसा है। डॉ. महेन्द्र भानावत ऐसे गोता लगाने वालों में निपुण हैं। उन्हें डूबना भी आता है और तैरकर किनारे आ जाना भी। यह बात मालवी लोकसाहित्य के ख्यातनाम लेखक डॉ. पूरन सहगल ने 'गवरी' नामक बालोपयोगी पुस्तक का लोकार्पण करते कही। उन्होंने कहा कि गवरी जनजातीय भीलों का आनुष्ठानिक नृत्य है। अनेक चित्रों से सज्जित यह पोथी बालकों को भीली जीवन के आस्थानुरंजन को समझने के साथ-साथ उनके जीवनानंद की उमंग और उत्साह भी देगी। कृति के प्रकाशक बाल साहित्य के सुधी लेखक राजकुमार जैन 'राजन' ने कहा कि उन्होंने अब तक लगभग डेढ़ दर्जन लेखकों से विभिन्न विधाओं में बाल साहित्य की पुस्तकें लिखवाई और उनके पंजाबी, ओड़िया, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी, सिंधी तथा कन्नड़ में अनुवाद करा लगभग 50 हजार की किताबें देश की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में निशुल्क भेंट की हैं।

लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि मैंने कविता, कहानी, एकांकी, गल्प तथा कंठासीन कथा-कथन को लेकर एक दर्जन से अधिक बाल पुस्तकों का प्रणयन किया है। अब श्री राजन के जुड़ने से उनकी चाह के अनुसार मुझे लोक विधाओं की विविध पुस्तकें लिखने में सेवाजनित प्रसन्नता ही होगी। इससे बालकों में परम्परागत समृद्ध विरासत के प्रति लगाव के साथ-साथ उनके संरक्षण को भी बल मिलेगा। इस अवसर पर डॉ. तुक्तक भानावत, डॉ. कहानी भानावत, डॉ. नरेन्द्र व्यास, कपिल श्रीमाली, डॉ. रवि शर्मा, शैलेष नागदा, राजेन्द्र पालीवाल, देवीलाल मीणा उपस्थित थे।

खोज-खबर

सामरजी के साथ देखी गणगौर की सवारी

सन् 1960 के दशक से लेकर लगभग 60 वर्ष से देखता आ रहा गणगौर उत्सव कई तरह की रंगीनियों का बदलाव देता आ रहा है। कई बार लगता है, समय और परिस्थिति का पर्यावरण भी अपने अनुकूल किसी त्यौहार एवं उत्सव को समेटता है। हमारा मन भी जिसमें रमा रहा, वसीयती वकालात करता लगता है।

अतीत की यादें बहुत सुनहली लगती हैं। वर्तमान की तो कोई याद शक्ल ही नहीं ले पाती है। पहले बहुत दूर-दूर तक के गांवों तक के लोग यह उत्सव देखने उमड़ते थे। अब शायद वहां भी छोटा-मोटा उत्सव प्रारम्भ हो गया हो। तब मनोरंजन के अन्य साधन भी नहीं थे।

मुझे सन् 1972 में देखा गणगौर का मेला याद आ रहा है। इसलिए भी कि वह मेला मैंने अपने यार-दोस्तों या परिवारजनों के साथ नहीं देखकर भारतीय लोककला मंण्डल के संचालक देवीलाल सामर के साथ देखा था और हमारे साथ थे छाबदार भगवानलाल दर्जी जो महाराणा की छाबदारी नौकरी में रहे। उनके पास जवाहरात का चार्ज था। वे सवारी में हर समय साथ रहते थे। एक बार चलती सवारी में महाराणा भूपालसिंहजी की पगड़ी का छल्ला ढीला हो गया तब हाथी को रोककर भगवानजी ने पीछे बैठ टीप लगाकर उसे दुरस्त किया।

सामरजी ने कोई 25 वर्ष बाद यह मेला देखा। उन्हें लगा स्वतंत्रता के बाद जैसे ये त्यौहार पराये हो गये हैं। ठंडी पड़ी गणगौरें और उनका जड़ाव, रंगरूप, रौनक भी फीकी होती लगी। भगवानजी कलामंडल में कठपुतलियों की तथा कलाकारों की पोशाकें सिलने का काम करते थे। हमारे साथ रह उन्होंने अपने समय के गणगौर उत्सव के बारे में बताना शुरू किया।

भगवानजी बोलते गए, 'हुकम पांच दिन तक गणगौर की सवारी निकलती थी, पांच रंगों में। पहले दिन का गुलाबी, दूसरे दिन का कसूमल, फिर हरा, फिर भोपालशाही और फिर पीला रंग। राणाजी को पाग भी इन्हीं रंगों की धारण कराई जाती। सरदार-उमराव भी इसी रंग में। यहां तक कि किश्ती भी इन्हीं रंगों में सजाई जाती। इस दिन का किश्ती का गीत - 'हेली नाव री असवारी सजन राण आवे छे' आज जैसे गोत मना गया है।

महलों की गणगौर माता एकल में ही होती। इसके साथ ईसरजी नहीं होते। इन्हें भोइणियां ऊंचाती। उनके साथ दो चंवर ढोलने वाली महिलाएं होतीं। धाबाइणियां तथा बोदणियां होतीं। ढोलणियां ढोल बजातीं। महलों में ही लहर आने पर कभी-कभाक राणीजी भी पधार जातीं। सवारी बहुत बड़ी, हाथी की भव्य सवारी होती। इतनी बड़ी कि महाराणा जब महलों से पधारना प्रारम्भ करते तो आगेवान निसांण का हाथी गणगौर घाट पर होता।

महाराणा को सूचना तोप द्वारा दी जाती। महाराणा गणगौर घाट पर पधार कर किश्ती में बिराजते। इस समय भी तोप चलाई जाती। किश्ती घूमघाम कर पुन: इसी घाट पर आती जहां रंडियां घूमर घालतीं। यहां से श्रीजी नाव में बिराजकर गोलमहल के बंशीघाट पर पहुंचते जहां नाव लंगर डालती। महाराणा यहां उतरकर महल पधार जाते जिसकी सूचना के लिए भी तोप दागी जाती। तोपखाना माछला मगरा उन दिनों जितना चहलकदमी था, आज जैसे कोपखाना बना हुआ है।' - म.भा.

खोज-खबर

दशामाता सीख दो घर जावां

-डॉ. कविता मेहता -

होली के दूसरे दिन से महिलाओं के दस दिन तक दशामाता के व्रतानुष्ठान शुरू हो जाते हैं। दशामाता वह देवी है जो घर की दशा-दिशा ठीक बनाये रखती है। इसीलिए ये दस दिन अगता के कहलाते हैं। इन दिनों महिलाएं खांडने, पीसने, सिलाई करने तथा माथा मींडी करने सम्बन्धी कोई कार्य नहीं करती हैं। व्रत करती हैं। प्रतिदिन दशामाता की पांच अथवा दस कहानियां सुनती हैं। गवाड़ी की औरतें एक स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं जहां कहानी सुनाने वाली से कहानी सुनकर फिर व्रत खोलती हैं।

राजस्थान में 'सात वार और नौ त्यौहार' कहावत प्रचलित है। इसके अनुसार यहां हर दिन ही कोई न कोई त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान होता रहता है। इससे महिलाएं ही सर्वाधिक रूप से जुड़ी हुई रहती हैं। दीवाल पर दशादेवी के अंकन बनाये जाते हैं जिन्हें थापा कहते हैं। इनमें सबसे सरल थापा दस बिंदियों का होता है। कहीं दस आकृतियां दशामाता की अनंत रूपा शक्ति की प्रतीक होती हैं। कुछ अंकनों में दशामाता की मंदरी बनाई जाकर उसमें माता तथा कहीं डाड़ा बावजी की नर-नारी रूप आकृतियां बनाई जाती हैं। डाड़ा से तात्पर्य दिन से है। दिन का स्वामी सूर्य होता है। अत: इनकी कहानी भी कही जाती है। मंदरी में केल का वृक्ष, कांच कांगसी, निसरनी, कमल का फूल, संतरी, बांदरवाल, झांपड़ी, बुहारी, वेल पत्ती, झाड़ू, हाथी, घोड़ा, मोर, हंस, चीड़े-चीड़ी तो कहीं दशा-डाड़ा छाछ बिलोते, चौपड़ खेलते दिखाये जाते हैं। ये सब विशिष्ट अर्थ के द्योतक होकर पारिवारिक रिद्धि-सिद्धि-समृद्धि और खुशहाली के प्रतीक होते हैं।

देश के अनेक भागों में विविध रूपेण दशामाता के अंकन तथा व्रतानुष्ठान आयोजित होते हैं। दशामाता का निवास पीपल वृक्ष में कहा गया है सो अंतिम दिन बहुत सवेरे सजधजकर महिलाएं दशामाता का पूजा-थाल सजाती हैं। थाल में जल भरा लोठा, दस बताशे, कुंकुम, सुपारी, पान, काजल, लच्छा, दही, मेंहदी, पैसा के अलावा हल्दी मिश्रित गेहूं के आटे के विविध आभूषण-सिर का बोरला, गले की हांसली, चूड़ियां, आयलें, अंगूठियां, माछरियां, दीपक तथा दस फर बनाती हैं।

पूजा के बाद पीपल वृक्ष की परिक्रमा करती हैं और सबसे छोटी अंगुली के नाखून से पीपल की छाल उतार बड़े यत्न से आभूषणों के साथ संभाले रखती हैं। यह छाल सोना कहलाती है।

गीतों तथा कथाओं में दशामाता से अन्न, धन, लक्ष्मी, दूध-पूत, पूतों का परिवार, सांईजी का राज, लक्ष्मी का वास, इन्द्र सा पिता, गंगा सी माता, गोपा सी बहन, कृष्ण सा भाई, गरजते गाड़े, रींगते पाड़े, हंसते हाथी, घूमते घोड़े, जेट भरी थाली, बहू का रांधा, बहिन का परोसा, राम-लछमण का खांध, सीता सी चाल-चलावा, समुद्र सा सुसराल, दशरथ सा श्वसुर, कौशल्या सी सास, लक्ष्मण सा देवर, राम सा भरतार, पांव में पायल, ओढ़ने को चीर, पहनने को पीतांबर, जीमने को लड्डू और रहने को महल-झरोखे मांगती हैं।

मैंने विभन्न स्थानों, गांवों, शहरों से दशामाता सम्बंधी एक सौ एक कहानियां एकत्र कीं और उनके आधार पर 1989 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। बाद में शोध प्रबन्ध 'दशामाता की लोकव्रत संस्कृति' नाम से सन् 2009 में प्रकाशित हुआ।

खोज-खबर

वे दिग्गज साहित्यकारों के दिन

कई बार लगता है कि बीता हुआ समय अधिक महत्वपूर्ण, मूल्यवान और उपलब्धिमूलक होता है। वे दिन कइयों को याद आते हैं। उदाहरण भी बनते हैं।

शायद हर एक के साथ ऐसा ही होता हो। वर्तमान तो उस एक्केलेटर की तरह होता है जिस पर से सावधानीपूर्वक चढ़ना-उतरना होता है। लेकिन यह बीच की कड़ी है। इसके सहारे अतीत से आते भविष्य को पकड़ना होता है। अतीत तो छूटता जैसे चलायमान ही लगता है। पुन: तो किसी को नहीं पकड़ सकते। अतीत भी फिसला, वर्तमान भी गया। भविष्य भी बीता। तीनों का होना ही जीवन की अनिवार्यता लगती है। ऋतुमय जीवन बनता दिखाई देता है। तीनों एक-दूसरे को पकड़े अंधे की लाठी बने होते हैं। वर्तमान अतीत बनता है और भविष्य वर्तमान बनता अतीतोन्मुखी होता है। यही चालाचाली का खेल है जिसे जगत कहते हैं।

उदयपुर को समरण करूं तो पीछे जाऊंगा तब स्वर्णिम होगा। कितने समारोह, संगोष्ठियां, व्याख्यानमाला, गोष्ठियां यादगार बनी हुई हैं। वे लोग भी थे जो निरन्तर समारोह मांडते, बिछाते, ओढ़ते, तानते, तनमय होते। हिन्दी विभाग में डॉ. देवराज उपाध्याय थे, बहरापन लिये किन्तु बड़े हलचल भरे। जनार्दनराय नागर सब दृष्टि से समर्थ। देवीलाल सामर लोककलाओं के अजायबघर।

पुराने चित्रों के अटाले में ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक अलभ्य चित्र हाथ लगा। यह विशिष्ट समारोह का है जिसमें अज्ञेयजी बुलाये गये थे। राजस्थान विद्यापीठ के श्रमजीवी कॉलेज में हुआ था, शायद साहित्य अकादमी की ओर से। इसके समापन पर एक फोटू खींचवाया गया था जिसमें कुल सौलह चेहरे हैं।

प्रथम पंक्ति में क्रमश: डॉ. पूनम दईया, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', अज्ञेय, आलमशाह खान, जनार्दनराय नागर, डॉ. महेन्द्र भानावत और डॉ. नवलकिशोर हैं। पीछे खड़ों में डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, राजेन्द्र सक्सेना, देवदत्त शर्मा तथा डॉ. देव कोठारी हैं।

पिछले दिनों डॉ. दिनेशजी ने ऐसे अलभ्य यादगार फोटो की याद दिलाई थी जो उनके अभिनंदन ग्रंथ की शोभा बन सकें। मैंने उन्हें यह चित्र भेजा जो 05 मार्च 1983 का है। - म.भा.

रतन जतन कर राखजो ए मांय

-डॉ. कहानी भानावत -

चैत्र मास में होली के बाद कहीं सप्तमी तो कहीं अष्ठमी पर शीतला माता का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ठण्डा खाया जाता है। माता शीतला चेचक की देवी मानी जाती है। अत: औरतें एक रात पहले माता सम्बन्धी नाना गीत गाती हैं जिनमें माता का नखशिख वर्णन, उसका गुण गौरव, उसकी महिमा तथा बाल-बच्चों को सुन्दर स्वस्थ रखने की भावना व्यक्त की जाती है।

इसी रात्रि को दूसरे दिन का खाना बना लिया जाता है जिसमें ढोकले, ओलिया, चावल, पूड़ियां तथा अमचूर, केल, सांगरी, वरकणे व कुरमुदे की सब्जी बनाई जाती है।

प्रात: होने पर माता के लिए पूजापे की थाल सजाई जाती है जिसमें कुंकुम्, कूलर, मेंहदी, सुपारी, दही, ओलिया, पतासी, ढोकला, चावल, एक मुट्ठी धान, आटे के बने दीपक रखे रहते हैं। पूजा थाल लेकर नये वस्त्राभूषणों से सज्जित हो औरतें माताजी के थानक पर जाती हैं जहां माताजी के रूप में चेचकनुमे धांधले पत्थर पूजे जाते हैं। यहीं माताजी की पूजा के बाद छोटी-छोटी कंकरियां एकत्र कर पथवारी के रूप में पूजी जाती है। इस समय जो गीत गाये जाते उनमें पारिवारिक ऋद्धि-समृद्धि सूचक भावनाएं देखने को मिलती हैं।

कहीं-कहीं शीतला के व्रत भी किये जाते हैं। व्रत करने के लिए औरतें दीवार पर सिन्दूर कुंकुम् का थापा बनाती हैं। थापों में कहीं गोलाई में माताजी के हाथ, सातिया, त्रिशूल एवं मेंहदी की सात बिन्दियां दी हुई होती हैं तो कहीं माता के वाहन गधे द्वारा गाड़ी खींचने का दृश्य बनाया जाता है। ये थापे बड़े कलात्मक, आकर्षक और धार्मिक अभिव्यक्ति के पोषक होते हैं। राजस्थान में इस त्यौहार पर स्थान-स्थान पर मेलों का भी आयोजन होता है जिनमें ग्रामीण लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। लोकोत्सव के रूप में यह राजस्थान के प्रमुख पर्वों में से एक है।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 मार्च 2018

सम्पादकीय

जुड़वा त्यौहारों का महत्व

हमारे यहां कुछ त्यौहार ऐसे हैं जो अपने तक ही सीमित न होकर आगे आने वाले त्यौहार से जुड़े होते हैं और इसी में उनकी सार्थकता-निरन्तरता निहित है। संक्रांत पर गोबर के जो विविध संकरांतड़े बनाये जाते हैं उन्हीं संकरांतड़ों से बसन्त पंचमी को चूरमा-बाटी का भोजन बनाया जाता है। रक्षाबन्धन पर भाई-बहिन जो राखी बांधते हैं वह गोवर्द्धन पूजा पर गोबर के लड्डू में रखकर पूजी जाती है और होली पर इस लड्डू को उसके साथ जला दिया जाता है। कहते हैं, राखी-होली दोनों बहिनें तथा गोरधन उनका भाई है।

होली-गणगौर भी इसी प्रकार एक-दूसरे से जुड़े त्यौहार हैं। पुराण में कथा है कि हिरण्यकश्यप नाम का राजा था जो बड़ा नास्तिक था पर उसके प्रहलाद नाम का पुत्र बड़ा आस्तिक था। राजा प्रहलाद को फूटी आंख भी नहीं चाहता था। उसने उसे मरवा डालने के लिए अनेक प्रयत्न किये पर सब विफल रहे। अन्त में अपनी बहिन होलिका को यह कार्य सौंपा जो अपने साथ उसे लेकर अग्नि में प्रवेश कर गई। इस चिता में बड़ी विचित्र घटना घटी कि जिस होलिका को अग्नि स्नान का वरदान था वह जल मरी और प्रहलाद बाल-बाल बच गया।

होलिका के मरने की खबर चारों ओर फैल गई। हिरण्यकश्यप का जीना दूभर हो गया। उधर होली के पति ईसर ने चढ़ाई कर दी। हिरण्यकश्यप घबराया। मंत्री, ज्योतिषी, तान्त्रिक इकट्ठे हुए। सबने अपनी-अपनी अटकलों से होलिका को जीवित करने का भरसक प्रयत्न किया पर यह कार्य हुआ बालिकाओं द्वारा जिन्होंने होली की राख के पिण्ड बनाकर अपने गीत-मन्त्रों से उनकी पूजा प्रारम्भ कर दी।

कहते हैं सातवें दिन से ही लड़कियों को यह लगा कि पिण्डों में प्राण पड़ने शुरू हो गये हैं।

इधर लड़कियों के घरों में धन-धान्य, सुख-आनन्द की बढ़ोतरी होनी प्रारम्भ हो गई तो स्वाभाविक था उनकी माताएं भी उनके अनुष्ठान के साथ अधिक श्रद्धा-आस्था के साथ जुड़ गई। पन्द्रहवें दिन पूजा करने वाली एक षोडशी को स्वप्न दिया कि तुम एक काठ-प्रतिमा बनाकर उसे अच्छे पूरे वस्त्र-आभूषणों से अलंकृत कर देना। मैं गौरा के रूप में उसी में जीवित हो उठूंगी।

यही होली, गणगौर के रूप में सरजीवित होकर यहां महिलाओं की मंगल कल्याण तथा चिर सुहाग देने वाली देवी बनी वहां लड़कियों में अच्छे वर तथा अच्छे घर की उनहें स्वामिनी बनने के रूप में पूजित हुई। गणगौर के दिन महिलाएं गणगौर माता का थापा घर की दीवाल पर अंकित करती हैं।

गणगौर की कहानी सुनती हैं और व्रत करती हैं। शेखावाटी की ओर तो कुम्हार लोग जो गणगौर बनाते हैं उसमें होली की राख अनिवार्यत: मिलाते हैं। इन गणगौरों का केवल धड़ ही बनाया जाता है और इन्हीं की उधर सवारी निकाली जाती है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' का होली अंक पढ़ा। अब वह हुलास कहां! राजस्थान के विविध अंचलों में जो फागुणी बयार थी वह अब देखने को नहीं मिलती। शेखावाटी का गींदड़ नृत्य कभी नर्तकों की उमंग का उफान, नगाड़ा वादन का जोश तथा दर्शकों की उत्साहजनित पराकाष्ठा लिये था और उम्र की सीमा तथा मन की लाज उलांघ कर कलाकार अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते थे, अब लगता है जैसे वह औपचारिकता के निर्वहन में सिमटता जा रहा है।

वह नृत्य ही नहीं रहा जो दो-तीन घेरों में घेर लिए होता था। स्वांग की विविधता भी जाती रही। पनघट, चौपाल और चबूतरे अब फागुनी हवा से दस्तक नहीं देते। वे झुंड में गाने वाली महिलाएं, बगीचियों में होने वाली गोठ-घूघरियां, गली-मुहल्लों की छेड़छाड़, चुहल और कटाक्षबाजी से गूंजने वाले ठहाके, बारहमासा द्वारा पिया को बुलाने की अरदास, चटख चांदनी में बच्चों के खेल, युवकों की टोलियों का मोहल्लों में गीतों की स्वर लहरी से घूमना सब जैसे अतीत की गहराइयों में डूब गये हैं। ऐसे में 'शब्द रंजन' के माध्यम से जो जनरंजन हो रहा है, उससे लगता है कि लोकसंस्कृति की जड़ें अभी पूरी तरह सूखी नहीं हैं।

- राजकुमार पारीक, सीकर

शुभ विवाह

उदयपुर में 7 मार्च को सम्पन्न हुए विवाह में दिल्ली के प्रकाशक गोविंदलाल सिंह, डॉ. महेन्द्र भानावत, वर-वधू, परिमल प्रकाशन के परिमल तथा डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'। इस विवाह में पुष्पा-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' के पुत्र गौरव तथा राधादेवी-अमृतलाल की पुत्री अंजलि को आशीर्वाद देने अनेक साहित्यकार, समाजसेवी, शिक्षक तथा समधीगण सम्मिलित हुए।

'जैन लोक का पारदर्शी मन' पुस्तक भेंट

श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि तथा उनके सहयोगी डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि एवं डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि सूरत चातुर्मास पूर्ण कर उदयपुर पधारे। तब लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने तारक गुरु ग्रंथालय में अपनी नव कृति 'जैन लोक का पारदर्शी मन' भेंट की। इस अवसर पर प्राकृत के जैन विद्वान डॉ. उदयचंद जैन भी उपस्थित थे।

होली पर ढूंढोत्सव

उदयपुर में हिम्मतसिंह-प्रियंकासिंह चौहान के सुपुत्र शिवायसिंह चौहान को ढूंढाते परिजन।

डबोक में भरत-प्रिया पालीवाल के सुपुत्र हिमांशु को ढूंढाते परिजन।

ट्यूमर का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक महिला के ट्यूमर का सफल ऑपरेशन किया है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गुडली, उदयपुर निवासी गंगा बाई (53) को गत दिनों कोमा की अवस्था में पीआईएमएस में भर्ती किया गया। जांचों के बाद पता चला कि महिला को ट्यूमर है।

इस पर डॉ. अनुराग पटेरिया एवं टीम द्वारा महिला का ऑपरेशन कर क्रिकेट बॉल के आकार का ट्यूमर (7-8 से.मी.) को पूरा निकाला गया। इस जटिल ऑपरेशन में लगभग 7 घंटे का समय लगा। महिला अब पूर्ण रूप से होश में और स्वस्थ है।

कहावतों के कहकहे (7)

(75) करम री टूटी कणीऊं नीं हदै

(76) करी जो भरी नै वाई जो लाटी

(77) करै सेवा वो पावै मेवा

(78) काको दै भतीजा नै गांड फाटतां गोठ

(79) काग उड़ै नै कुत्ता भूसै

(80) कागलो हंसा री चाल चालवा लागो

(81) काच, कतरणी, कांगस्यो, बालदार लपेटा, जननी जद ही जाणियो ये वगड़ायल बेटा

(82) कांजरा री कुत्ती कठेई जाती ब्याई

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

तारातरा मठ की कामधेनु

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'-

कहते हैं जीवन में जब पूर्वजन्म की पुण्यायी उदय होती है तो कुछ अद्‌भुत घटनाएं होती हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। देवयोग से मुझे तारातरा मठ, गांव तारातरा-बाड़मेर जाना हुआ। वहां पर मैंने 'कामधेनु' गौमाता के साक्षात् दर्शन किये। कामधेनु का शीश-स्पर्श वंदन किया। इससे पूर्व यह केवल सुना व पढ़ा ही था कि कामधेनु गौमाता साक्षात् देवी है। इसका पता मुझे तारातरा मठ के गादीपति महन्त प्रतापपुरी के आमंत्रणपत्र से लगा।

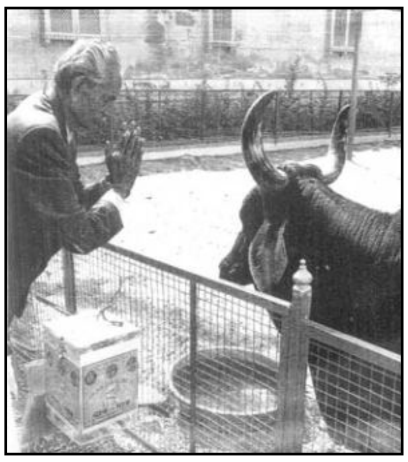

मठ में प.पू. महन्त मोहनपुरी महाराज की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का पांच दिवसीय भव्य आयोजन था। मैं 24 फरवरी 2018 को प्रात: तारातरा मठ गया। वहां कामधेनु देखी। जानकारी करने पर पता लगा कि यह गौमाता स्व. मोहनपुरीजी महाराज की परम स्नेही थी। यह गौमाता साक्षात् कामधेनु है। यह साल में तीन बार अपने शरीर का रंग बदलती है। इसका कोई निश्चित समय नहीं है। सत्य है कि यह गाय आज तक बिना बिहाई ही है। फिर भी प्रतिदिन 2 से 3 किलो दूध देती है।

इसी क्रम में मुझे डॉ. लक्ष्मणसिंह गड़ा से यह भी ज्ञात हुआ कि महन्त मोहनपुरीजी महाराज के देहावसान की वेला में इस गाय का रुदन लगातार तीन दिन तक रहा। गाय ने तीन दिन कुछ भी चारा, दाना, पानी ग्रहण नहीं किया। इसी अवधि में महन्त मोहनपुरीजी महाराज भादवा सुदी सातम वि.सं. 2072 को ब्रह्मलीन हुए। उस दिन रात को अनायास घटाघोप मेह बरसा। महाराज मोहनपुरीजी के ब्रह्मलीन होने के बाद ही इस कामधेनु की अश्रुधारा थमी। यह भी ज्ञात हुआ कि इसी गाय के दूध से भगवान शिव की मूर्ति-शिवलिंग का प्रतिदिन अभिषेक होता है।

क्या ईमानदार वेतनभोगी हतोत्साहित हैं ?

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

जब सरकारी नीतियों की वजह से ईमानदार करदाताओं का दमन और विभेदीकरण होता है तो वे हतोत्साहित होते हैं। इससे कर न चुकाने की प्रवृत्ति बलवती होती है। कर चोरी से नकद आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। समाज में काले धन का सृजन होता है। जब समाज का एक बड़ा वर्ग कर चोरी करता है तो निश्चित रूप से इमानदार करदाताओं पर भार बढ़ता है। कैसी विडम्बना है कि सरकार इमानदारी से कर चुकाने वाले को और ज्यादा कर चुकाने के लिए बाध्य करती है।

सच तो यह है कि वेतनभोगी व्यापारी करदाता की तुलना में ज्यादा कर चुकाता है। व्यापारी वर्ग के लिए आयकर कानून लचीला है। औसतन प्रत्येक वेतनभोगी करदाता ने 76306 रु. का कर चुकाया। इसके विपरित व्यापारी एवं पेशेवर करदाताओं ने केवल 48000 करोड़ रूपये आयकर के रूप में जमा कराया। अधिकांश व्यापारी वर्ग आयकर रिटर्न दाखिल नहीं करते हैं। आजादी के 70 वर्षों के पश्चात भी लगभग 4 प्रतिशत व्यक्ति ही आयकर के दायरे में आते हैं।

वित्त मंत्री ने अधिकाधिक व्यापारियों को टेक्स नेट में सम्मिलित करने एवं कर संग्रह बढ़ाने की कोई योजना प्रस्तुत नहीं की। उल्टे 250 कराड़ रुपये तक टर्नओवर वाली कम्पनियों की कर की दर 30 प्रतिशत से घटाकर 25 प्रतिशत कर दी जबकि वेतनभोगी करदाता की अभी भी 10 लाख रुपये से ज्यादा आय पर 30 प्रतिशत कर की दर है।

यद्यपि वेतनभोगी करदाताओं को लुभाने के लिए 40000 रु. प्रामाणिक कटौती देने का प्रावधान बजट में किया किन्तु यह ऊंट के मुंह में जीरा साबित हुआ। क्योंकि यात्रा भत्ता तथा चिकित्सा व्यय पुर्नभरण सुविधा समाप्त कर दी। परिणामत: कर्मचारी को केवल 5800 का ही लाभ हुआ।

यह कैसी सरकारी नीति है जो ईमानदारी से कर चुकाने वाले को प्रोत्साहित करने के बजाय उनको ज्यादा लाभ दे रही है जो कर की चोरी कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में छोटी मछलियों पर ध्यान केन्द्रित करने में बड़ी मछली हाथ से छुट जाती है। मेरी दृष्टि में वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए न्यूनतम कर मुक्त आय की सीमा 5 लाख रुपये तक बढ़ा देनी चाहिये ताकि यह वर्ग राहत महसूस करे।

कभी-कभी तो लगता है कि सभी राजनैतिक पार्टियां केवल अपना हित साधती हैं। व्यापारी वर्ग एवं कारपोरेट घराने के लोग राजनैतिक दलों को बड़ी मात्रा में चन्दा देते हैं परिणामस्वरूप उनके प्रति नरम नीति होती है। वर्तमान बजट व्यवस्था से तो ईमानदारी से कर चुकाने वाले हतोत्साहित ही होंगे। सरकार को निष्पक्ष आयकर नीति लाने का प्रयास करना चाहिये।

पोथीखाना

जिन्हें वे जानते हैं उन्हें जानिये

- लीलाधर -

डॉ. महेन्द्र भानावत के माध्यम से उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों को जानिये जिन्हें महेन्द्र भानावत जानते हैं। पुस्तक का नाम है- 'जिन्हें मैं जानता हूं'। लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत। यह पुस्तक मुक्तक प्रकाशन उदयपुर से सन् 1986 में प्रकाशित हुई। इसमें बीस जाने-माने प्रतिष्ठित साहित्यकारों एवं कलाकारों का जीवन चरित है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि इनमें से कई व्यक्ति करीब-करीब राजस्थान के जाये जन्मे हैं। डॉ. महेन्द्र भानावत ने इनके व्यक्तित्व पर पारदर्शी तरीके से प्रकाश डाला है। कलाकार या साहित्यकार के कृतित्व को उनके सृजन के कारण बहुत लोग जानते हैं।

महान लोगों के काम को जानने के साथ एक पाठक को उनके जीवन को जानने की जिज्ञासा बनी रहती है। साहित्यकारों व कलाकारों द्वारा लिखी आत्मकथाएं बेहतरीन साधन होते हैं। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व में परस्पर क्या तालमेल है, यह जानने पर ही आप उन्हें सम्पूर्णता में समझ सकते हैं।

कई बार श्रेष्ठ कृतित्व के धनी व्यक्ति के निजी जीवन में कई ऐसे पहलू होते हैं जो दूसरों की नजर में नकारात्मक प्रतीत होते हैं। स्वयं उस व्यक्ति की नजर में वह पहलू नकारात्मक नहीं होता है। इन बीस कलाकारों, साहित्यकारों के बारे में डॉ. महेन्द्र भानावत ने जो लिखा है वह स्वयं उनके निजी मेल-जोल व अनुभव का नतीजा है।

डॉ. महेन्द्र भानावत के पारदर्शी लेखन की यह विशेषता है कि हमें सृजनधर्मी के जीवन की सभी झलकियां इस पुस्तक में मिलती हैं। इस पुस्तक में जिन व्यक्तियों का परिचय दिया गया है उनमें एक श्री अगरचन्द नाहटा के साथ मुझे भी करीब पांच वर्ष तक काम करने का अवसर मिला।

श्री नाहटा को प्राचीन साहित्य व पाण्डुलिपि संग्रह का जुनून था। मैं उन दिनों बी.ए. का विद्यार्थी था।

फिर लॉ के अध्ययन में अग्रसर हुआ तब नाहटाजी के करीब 15-20 पत्र रोजाना उनके डिक्टेशन पर मैं लिखता। इसके अलावा उनके विशाल पुस्तकालय का कैटलॉग भी मैंने बनाया।

पारिश्रमिक तो अल्प होता पर इसके साथ ज्ञान-चक्षु जो खुलते जाते उसकी कोई सीमा नहीं रहती थी। बाद में उन्होंने मुझे सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट के कार्यालय का भार सौंपा, जहां मैंने अपनी लॉ की शिक्षा पूरी की। यद्यपि मेरा व्यवसाय कानून का था पर साहित्य के अध्ययन से मुझे अपने काम को सही अंजाम देने में भारी मदद मिली।

इस पुस्तक में जिन विद्वानों का जिक्र है उन सबके नाम से मैं पहले से परिचित हूं क्योंकि माननीय नाहटाजी समय-समय पर उन्हें पत्र लिखवाते तब उनकी बातें मेरे दिमाग से गुजरती थी।

डॉ. महेन्द्र भानावत की यह पुस्तक अपनेआप में बेजोड़ है। अगर किसी को राजस्थान को जानना है तो इस पुस्तक में वर्णित पुरोधाओं का जीवन चरित्र अवश्य पढ़ना चाहिए। ऐसी पुस्तक तो विद्यार्थियों को कोर्स में पढ़ाई जानी चाहिए। आशा की जा सकती है कि पुस्तक का नया संस्करण आकर्षक व लुभावना बनना चाहिए।

और अन्त में करणा भील पर कुछ पंक्तियां। डॉ. महेन्द्र भानावत ने 1986 में करणा भील पर लिखा। इसके करीब 15 वर्ष पश्चात जब मैं जैसलमेर का जिला जज था तब करणा भील के परिवार विशेषकर उसके पुत्र से मुझे मिलने का मौका मिला।

जैसलमेर के इतिहासकार श्री नन्दकिशोरजी ने भी करणा भील के बारे में काफी जानकारी दी। करणा भील की ताकत का अन्दाज लगा लें कि वह अपने कंधे की ताकत से ऊंट को भी ऊंचा कर लेता था। मूंछें उसकी अद्वितीय थी। वर्ष 1992 में उसका वध कर दिया गया। उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। उसके सिर को कातिल ले जाने में सफल रहे। कयास किया जाता है कि कातिल उसके सिर को पाकिस्तान ले गये। करणा भील पर यह उक्ति लागू होती है कि 'जैसी करनी, वैसी भरनी'। डॉ. महेन्द्र भानावत का कार्य स्तुत्य है।

रंग तेरस पर रुण्डेड़ा में गैर

उदयपुर से लगभग 50 किलोमीटर दूर वल्लभनगर तहसील के रुण्डेड़ा गांव में करीब साढ़े चार सौ वर्षों से महात्मा जति कलदासजी की स्मृति में गैर समारोह का आयोजन होता आ रहा है।

यहां के रेनकुमार पालीवाल ने बताया कि उत्तर दिशा में स्थित धूणी पर गांव के पंच तीन ढोल, थाली और मादल के साथ पहुंच कर दिव्यात्मा को आमन्त्रित करने के बाद तीनों ढोल के साथ ग्रामीण रवाना होते हैं।

वे मार्ग में डेमन बावजी को आमन्त्रित कर आशीर्वाद लेते हैं और गांव के बड़े मंदिर पहुंचते हैं। यहा भांग लेने की रस्म पूरी कर जतिजी की अमानत माला, चिमटा व घोड़ी लेकर गैर नृत्य शरू किया जाता है। कुछ देर नृत्य के बाद ग्रामीण यहाँ से तलहटी मंदिर, निंबड़िया बावजी, जूना मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, महादेव मंदिर, जणवा समाज का मन्दिर होते हुए पुन: बड़ा मंदिर पहुंचते हैं।

मन्दिर में दर्शन व पूजा-अर्चना के बाद ग्रामीण अपने-अपने घर पर पहुंचते हैं। युवा और बुजूर्ग सफेद कुर्ता-धोती और सिर पर पगड़ी धारण कर सजते संवरते हैं। मेहमानों व रिश्तेदारों का स्वागत कर उन्हें अपने घर ले जाते हैं और खान-पान का दौर चलता है। रात करीब नौ बजे ग्रामीण फिर चौक पर एकत्रित होते हैं, जहां ढोल की लय-ताल पर गैर नृत्य किया जाता है। इसमें बुजूर्गों सहित युवाओं व बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। गैर नृत्य के साथ ही तलवार व आग के गोले से हैरतअंगेज कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं।

यह कार्यक्रम सुबह करीब चार बजे तक जारी रहता है। कार्यक्रम का समापन आतिशबाजी व तोप चलाकर किया जाता है। आयोजन में गांव के मेनारिया ब्राह्मण, जाट व जणवा सहित सभी समाजों का सहयोग रहता है। इस बार गैर के दौरान गांव के सोहनलाल मेनारिया, मोतीलाल भट्ट, मोहनलाल मेनारिया, लक्ष्मीलाल मेनारिया, रमेशचंद्र पालीवाल, राधाकिशन मेनारिया, गोपीलाल मेनारिया, गुलाबचंद जावट का सहयोग रहा।

रोल्स रॉयस फेंटम लॉन्च

उदयपुर। रोल्स-रॉयस मोटर कार्स ने उत्तर भारत में एक नया मॉडल फेंटम लॉन्च किया है। यह मॉडल कंपनी के नई दिल्ली स्थित एकमात्र अधिकृत डीलर सेलेक्ट कार्स प्रा. लि. के पास उपलब्ध होगा। रोल्स-रॉयस मोटर कार्स के मैनेजिंग डायरेक्टर और सेलेक्ट कार्स प्रा. लि. के सीईओ यदुर कपूर ने कहा कि फैंटम भारत में सफलता का सर्वोच्च परिचायक है। यह न केवल मोटर वाहन क्षेत्र बल्कि लग्जरी की दुनिया के शिखर पर मौजूद है। विलासिता की प्रामाणिक वस्तुएं हमेशा दुर्लभ और उत्कृष्टता का प्रतीक होती है। फैंटम उत्तम गुणवत्ता की कला और विश्वस्तरीय तकनीक के मेल से बनी है।

पॉल हैरिस, एशिया पेसेफिक रीजनल डायरेक्टर, रोल्स-रॉयस मोटर कार्स के मुताबिक भारत में ब्रांड के लिए नई फैंटम एक और मील का पत्थर है। नई फैंटम की डिजाइन में रोल्स-रॉयस के मूल डीएनए का समकालीन रूप झलकता है जो कि ताकत का प्रतीक है। एक नया स्पेसफ्रेम जिसे विशिष्ट रूप से भविष्य की सभी रोल्स-रॉयस गाड़ियों में लगाने के लिए बनाया गया है। यह पिछले सभी प्रेम्स की तुलना में हल्का और ज्यादा मजबूत है। अगली पीढ़ी का फोर-कॉर्नर एयर सस्पेंशन सिस्टम, अत्याधुनिक चौसी कंट्रोल सिस्टम, 130 किलोग्राम का साउंड इंसुलेशन, डबल लेमिनेटेड ग्लास और पूरे बल्कहेड पर ड्यूअल स्किन एलोय्स जो सुनिश्चित करते हैं कि नई फैंटम आराम और शांति भरी सवारी का सर्वश्रेष्ठ अनुभव प्रदान करे।

माउंटेन ड्यू का नया कैम्पेन

उदयपुर। पेप्सिको के माउंटेन ड्यू ने नया कैंपेन लांच किया है। इस कैंपेन के जरिए असली जीवन के हीरो अर्जुन वाजपेयी की यात्रा का जश्न मनाया जा रहा है। पेप्सिको इंडिया की एसोसिएट डायरेक्टर (माउंटेन ड्यू) नसीब पुरी ने कहा कि माउंटेन ड्यू ने हमेशा ही उन आम लोगों के जज्बे को सलाम किया है, जो असाधारण परिणाम हासिल करने के लिए हरसंभव कोशिश करते हैं और इस प्रक्रिया में अपनी एक अलग पहचान बनाते हैं। माउंटेन ड्यू के ब्रांड एंबेसडर ऋतिक रोशन इस बायोपिक में अर्जुन की भूमिका निभा रहे हैं और सबसे मुश्किल समिट में से एक माने जाने वाले माउंट चो ओयू पर उनकी सफल चढ़ाई को दिखाएंगे। जेडब्ल्यूटी इंडिया के चीफ क्रिएटिव ऑफिसर सेंथिल कुमार ने कहा कि माउंटेन ड्यू एडवर्टाइजिंग रोमांच की भावना का जश्न मनाता है और आम लोगों को अपने लिए एक नाम बनाने की खातिर प्रोत्साहित करता है। इस साल हम अर्जुन वाजपेयी की कहानी के साथ बायोपिक टीवीसी के रूप में बिलकुल नया फॉर्मेट लेकर आ रहे हैं।

एचडीएफसी लाइफ पेंशन गारण्टीड प्लान लांच

उदयपुर। एचडीएफसी लाइफ ने एचडीएफसी लाइफ पेंशन गारण्टीड प्लान की घोषणा की। ये एकल प्रीमियम वार्षिक प्लान है जो खरीद के समय से ही गारंटीकृत स्थगित वार्षिक दरों की गारंटी देता है। ये प्लान उन लोगों को ज्यादा लाभ देता है, जो लंबी अवधि के लिए उच्च वार्षिक-भत्ते की दरों की पेशकश करके एडवांस प्लान बनाते हैं। ये प्लान कोई भी खरीद सकता है और वार्षिक-भत्ता प्राप्त करने का निर्णय ले सकता है।

सीनियर ईवीपी चीफ एक्चुअरी और अपॉइंटेड एक्चुअरी श्रीनिवासन पार्थसारथी ने कहा कि एचडीएफसी लाइफ पेंशन गारण्टीड प्लान मासिक, त्रैमासिक, द्विवार्षिक या वार्षिक रूप से भी प्राप्त कर सकता है। हमने एचडीएफसी लाइफ पेंशन गारण्टीड प्लान तैयार किया है, ताकि व्यक्ति अपनी सेवानिवृत्ति को सुरक्षित कर सके।

विलम्बित वार्षिक विकल्प पहले योजनाकारों को एक वार्षिक-भत्ते की पेशकश करके जीवनभर के लिए गारंटी देता है, जो कि खरीद के समय से ही तय होती है। किसी को भी वार्षिक-भत्ता जानने के लिए रिटायरमेंट तक इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा, सेवानिवृत्ति के लिए अग्रिम योजनाओं को उच्च वार्षिक दरों के माध्यम से लाभान्वित किया जाता है, जो कि स्थगन अवधि के अनुसार 13 प्रतिशत के बराबर हो सकता है।

किडनी से कैंसर की गांठ निकाली

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटलुर के यूरोलोजिस्ट डॉ पंकज त्रिवेदी ने 68 वर्षीय रोगी जमनालाल की दायीं किडनी में स्थित 5.2 सेंटीमीटर बड़ी कैंसर की गांठ एवं 45 वर्षीय महिला रोगी बालाबाई की बायीं किडनी में स्थित 4.5 सेंटीमीटर बड़ी कैंसर की गांठ को निकाल सफल सर्जरी की है। किडनी में कैंसर को देखते हुए रोगियों को कई अस्पतालों ने पूरी किडनी निकालने की सलाह दी। डॉ. त्रिवेदी ने बारीकी से सीटी स्केन की जांच का अध्ययन कर न केवल किडनी में से कैंसर की गांठ को निकाला बल्कि दोनों रोगियों की किडनी को भी बचा लिया। इस टीम में उनके साथ यूरोलोजिस्ट डॉ विश्वास बाहेती, एनेस्थेटिस्ट डॉ उदयप्रताप, ओटी स्टाफ पुष्कर, अविनाश, जयप्रकाश एवं प्रवीण ने सहयोग प्रदान किया।

सूक्ष्म स्वर्णिम कलम, दवात व कागज

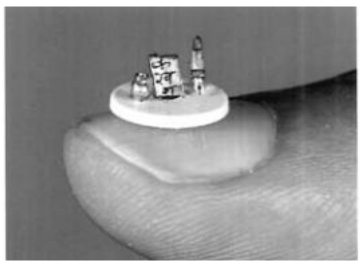

उदयपुर। स्वर्ण निर्मित सूक्ष्म कलाकृतियों के शिल्पकार इकबाल सक्का ने लेंस से देखी जाने वाली सोने की कलम दवात व कागज की प्रतिकृति बनाई। इनमें कलम चार, दवात एक, नीब एक तथा कागज 3 गुणा 2 मिलीमीटर है।

मिरिंडा व फोर्टिस में साझेदारी

उदयपुर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की दसवीं और बारहवीं कक्षा की परीक्षाएं शुरू होने के साथ ही मिरिंडा ने फोर्टिस हेल्थकेयर के डिपार्टमेंट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड बिहैवियोरल साइंसेज़ के साथ साझेदारी की है। फोर्टिस हेल्थकेयर में डिपार्टमेंट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड बिहैवियोरल साइंसेज़ के डायरेक्टर डॉ. समीर पारीख ने कहा कि इस साझेदारी के तहत मिरिंडा छात्रों को परीक्षाओं से संबंधित तनाव दूर करने के लिए व्यावहारिक समाधान उपलब्ध कराएगी। यह साझेदारी मिरिंडा के 'रिलीज़ द प्रेशर' कैंपेन के तहत की गई है, जो परीक्षाओं के दौरान छात्रों पर पड़ने वाले अभिभावकों के दबाव, तनाव और बेचैनी संबंधी समस्याओं का समाधान करती है।

पेप्सिको इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर (फ्लेवर्स मार्केटिंग) गौरव वर्मा ने कहा कि इस साझेदारी की वजह यह तथ्य है कि छात्र परीक्षाओं को लेकर अत्यधिक तनाव में हैं और उन्हें इस तनाव से मुक्त करना बहुत आवश्यक है। 'रिलीज़ द प्रेशर में 45/15 की विचारधारा पर ध्यान दिया गया है, जिसमें छात्रों को प्रत्येक 45 मिनट पढ़ाई करने के बाद 15 मिनट का ब्रेक लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

शिविर में ख्यात चिकित्सकों की सेवाएं

उदयपुर। जैनाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि शिक्षण एवं चिकित्सा शोध संस्थान ट्रस्ट एवं सूरजदेवी भंवरलाल गोखरू चेरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में उपाध्याय गुरूदेव श्री पुष्करमुनि म.सा. के 25वें पुण्य स्मरण दिवस पर चतुर्थ विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर सेलिब्रेशन मॉल के सामने देवेंद्र धाम पर 17 व 18 मार्च को आयोजित किया जाएगा। शिविर में सामान्य रोगों सहित कई असाध्य रोगों पर अहमदाबाद के नामी सुपर स्पेशलिटी चिकित्सक परामर्श देंगे। दिनेश मुनि, डॉ. दीपेन्द्र मुनि, डॉ. पुष्पेंद्र मुनि की प्रेरणा से आयोजित हो रहे इस शिविर में दोनों दिन प्रात: 9 से दोपहर 3 बजे तक चिकित्सा परामर्श दिया जाएगा। यह जानकारी सूरजदेवी भंवरलाल गोखरू चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेंद्र गोखरू ने दी।

वॉइस ओवर एलईटी सेवा लॉन्च

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े दूरसंचार सेवा प्रदाताओं में से एक वोडाफोन इण्डिया ने राजस्थान के जयपुर और जोधपुर में अपनी वॉइस ओवर एलईटी सेवाओं को लॉन्च किया है। इसके साथ वोडाफोन राज्य में वॉइस ओवर एलईटी सेवाएं उपलब्ध कराने वाला पहला जीएसएम ऑपरेटर बन गया है। वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि राज्य के उपभोक्ता अब सुपर-फास्ट कॉल कनेक्ट टाईम के साथ एचडी गुणवत्ता के वॉइस कॉल का अनुभव पा सकेंगे। वोडाफोन 4जी उपभोक्ता बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के वोडाफोन के डेटा स्ट्रॉन्ग नेटवर्क पर वॉइस ओवर एलईटी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं और सभी कॉल्स का शुल्क मौजूदा प्लान या पैक के अनुसार ही रहेगा। हम अपने नेटवर्क के विस्तार, अपग्रेडेशन एवं आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त निवेश कर रहे हैं ताकि हमारे उपभोक्ता बेहतरीन सेवाओं और सहज कनेक्टिविटी का लाभ उठा सकें। हमें खुशी है कि वोडाफोन राजस्थान के जयपुर व जोधपुर में वॉइस ओवर एलईटी सेवाओं का लॉन्च करने वाला पहला जीएसएम ऑपरेटर है। हाल ही में वोडाफोन सेवाओं का लॉन्च मुंबई, दिल्ली-एनसीआर, गुजरात, महाराष्ट्र एवं गोवा में किया गया था और अगले कुछ महीनों में चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में इन सेवाओं को विस्तारित किया जाएगा।

बीसीएल टीम फ्रैंचाइज़ी का अधिग्रहण

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े फैशन ब्राण्ड्स में से एक केवल किरण क्लॉथिंग लिमिटेड से संबंधित डेनिम ब्राण्ड 'किलर' ने बॉक्स क्रिकेट लीग टीम फ्रैंचाइजी का अधिग्रहण किया है और इसका नाम 'गोवा किलर' रखा। क्रिकेट और मनोरंजन की दुनिया को मिलाते हुए, गोवा किलर बॉक्स क्रिकेट लीग (बीसीएल) की अन्य टीमों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही है। गोवा किलर ने इस सीजन की सबसे आकर्षक टीम होने का भरोसा दिलाया है, जिसमें बिग बॉस के पूर्व प्रतियोगी राखी सावंत, धिंचक पूजा, लव बर्ड्स बंदगी कालरा और पुनीष शर्मा शामिल हैं।

टीम को कप्तान के रूप रजनीश दुग्गल नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं तथा अन्य खिलाड़ियों में अर्जुन अनेजा, अयाज अहमद, साहिल खट्टर, सुमित भारद्वाज, माधव देवचक्क, पारस छाबड़ा, रेयानशवरी चड्ढा, एलन कपूर, ईशा आनंद शर्मा, चेश्टा भगत, पूजा बिष्ट, नलिनी नेगी, पवित्र पूनिया और गरीमा शामिल हैं। किलर अपने प्रशंसकों को सेलिब्रिटी टीम से मिलने और उनको बधाई देने का अवसर भी प्रदान करती है।

सिर्फ 2999 रूपये की खरीददारी पर प्रशंसक इस प्रतियोगिता में प्रवेश पा सकते हैं और गोवा किलर टीम से अपने पसंदीदा खिलाड़ियों से मिलने का मौका पा सकते हैं। अभिनेत्री उर्मिला मार्तोंडकर टीम गोवा किलर की समर्थक के रूप में नजर आएंगी।

'सूबेदार जोगिंदर सिंह' का पोस्टर रीलिज

उदयपुर। परमवीर चक्र विजेता सूबेदार जोगिंदर सिंह की बायोपिक 6 अप्रैल से देशभर के सिनेमा घरों में रिलीज होगी। फिल्म के डायरेक्टर समरजीत सिंह ने कहा कि भारत-चीन युद्ध के दौरान 1962 में चीनी हमलों का मुंह तोड़ जवाब देने वाले बहादुर सिपाही की बायोपिक 'सूबेदार जोगिंदर सिंह' राशीद रंगरेज द्वारा लिखित तथा सुमीत सिंह द्वारा तैयार की गई है।

सूबेदार जोगिंदर सिंह के रूप में अभिनेता गिप्पी ग्रेवाल अपनी पलटन के साथ दिखेंगे। यह देश की पहली ऐसी जीवनी हैं जो किसी परमवीर चक्र विजेता पर बनी है और पंजाबी के अलावा हिंदी, तमिल और तेलगु में रिलीज होगी। सुमीत सिंह ने कहा कि यह एक वीर सैनिक की जिंदगी और घटनाओं पर आधारित है, जो अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए जुनून और दृढ़ संकल्प से प्रेरित था। सूबेदार जोगिंदर सिंह सिख रेजिमेंट के असाधारण सैनिकों में से एक थे, जिन्हें भारत-चीन युद्ध 1962 के दौरान राष्ट्र की संप्रभुता की रक्षा के लिए, असाधारण साहस और उनके सर्वोच्च बलिदान के लिए सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से नवाजा गया।

होण्डा एक्स-ब्लेड की डिलीवरी शुरू

उदयपुर। होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इण्डिया प्रा. लि. ने अपनी ब्राण्ड न्यू 160 सीसी स्पोर्टी

मोटरसाइकल एक्स-ब्लेड की कीमत का ऐलान किया। पहली बार ऑटो-एक्सपो में पेश की गई स्टाइलिश एक्स-ब्लेड 75,500 रू. (एक्स-शोरूम, दिल्ली) की कीमत पर उपलब्ध है। होण्डा के किसी भी आउटलेट पर 5000 रू. में एक्स-ब्लेड की बुकिंग की जा सकती है। एक्स-ब्लेड मैट मार्वल ब्लू मैटेलिक, मैट फ्रोज़न सिल्वर मैटेलिक, पर्ल स्पार्टन रैड, पर्ल इग्नियस ब्लैक और मैट मार्शल ग्रीन मैटेलिक रंगों में उपलब्ध है।

होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इण्डिया प्रा. लि. के सेल्स एण्ड मार्केटिंग के सीनियर वाईस प्रेज़ीडेन्ट यदविंदरसिंह गुलेरिया ने बताया कि आज की युवा पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए आकर्षक स्पोर्टी लुक से युक्त नई एक्स-ब्लेड का डिज़ाइन तैयार किया गया है। एक्स-ब्लेड की डिलीवरी शुरू कर दी है।

ज़िंक को सीएसआर लीडरशिप सम्मान

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक को सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ल्ड सी.एस.आर. डे एवं राष्ट्रीय चेनल ने सामाजिक

सरोकारों के लिए सी.एस.आर. लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया। यह सम्मान हिन्दुस्तान जिंक द्वारा सामाजिक उत्थान एवं ग्रामीण विकास हेतु उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया।

यह सम्मान उप-मुख्य मार्केटिंग ऑफिसर विजय जयराम मूर्ति ने वर्ल्ड सस्टेनेबिलिटी के फाउण्डर डॉ. आर.एल. भाटिया से प्राप्त किया। समारोह में ज़िंक के मुकुल बेदी ने सी.एस.आर. पर एक प्रजेन्टशन दिया। यह जानकारी ज़िंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन, पवन कौशिक ने दी।

गणगौर पूजा........

(पृष्ठ एक का शेष)

ऐसी कन्याएं जिनका विवाह होता है, वे गणगौर को विसर्जित करने की बजाय अन्य किसी कन्या को पूजन के साथ अपनी गणगौर दे दती हैं।

काष्ट की गणगौर-ईसरजी निर्माण में जिन्दगी के करीब 65 साल होम की चुकी सायरदेवी व उनके पति मांगीलाल मिस्त्री के परिवार के सभी लोग इस काम में उनका हाथ बंटाते हैं। पौत्री मिकिता तो गणगौर-ईसरजी की काष्ट प्रतिमाओं में समय के अनुसार क्या बदलाव किया जा सकता है पर विशेष ध्यान लगाते हुए रिसर्च भी कर रही है। मिकिता का कहना है कि अभी गणगौर-ईसरजी की प्रतिमाएं पुराने पैटर्न पर ही बनाई जाती हैं। इसमें कलर से फिनिशिंग तो दी जाती है लेकिन चेहरे पर जो बारीकियां नजर आनी चाहिए वो नहीं है। इसके लिए उनके द्वारा फाइन आर्ट के माध्यम से इस काम को जल्द शुरू किया जाएगा।

इसी प्रकार गणगौर की पोशाक में लाल वेश सुहाग का सुख देता है। पीला प्रेम बढ़ाता है। गुलाबी गौरव व यश वर्धन करता है। नारंगी नेह जगाता है तो चून्दड़ी का वेश चिरायु बने रहने का शकुन देता है।

एक अनोखे किन्तु..........

(पृष्ठ दो का शेष)

उनसे मिलकर लगता कि जो व्यवहार उनका हमारे प्रति कभी-कभी कटुता लिए बन जाता है, उसका उन्हें भान ही नहीं है या कभी उन्होंने अपने बारे में सोचा ही नहीं है कि वे कैसे हैं? अपने परिजनों, स्वजनों और मित्रों के प्रति उनकी हमदर्दी रहती हुई भी वे उनसे बहुत दूर थे। नदी के दो किनारे जैसे मिलते हुए भी सदैव दूर बने रहते हैं वैसे ही विश्वंभर व्यास अपनी जिंदगी को स्वीकारते-नकारते रहे।

डॉ. व्यास अच्छे चित्रकार थे। ऐसा वे समय-समय पर बताते भी रहते थे। कई चित्र भी उन्होंने उनके बनाये मुझे बताये। कलामंडल से जब कोई प्रकाशन निकालते उसका कवर-टाईटल उन्हीं से तैयार होता। उनकी लिखावट भी बड़ी चौबोली घुमावदार अक्षर लिए थी। अपनी बातचीत में वे हिन्दी के साथ आधी-दूधी अंग्रेजी शब्दावली बोलकर अपने को तनिक चुस्त और फुर्तीला महसूस करते।

उदयपुर में 11 नवम्बर 2013 को विश्वंभर ने प्राणपखेरु खोये। इसका मुझे पता ही नहीं चला। इधर उसी दिन ओंकारश्री भी चल बसे। अशोकनगर श्मशान से राजस्थान साहित्य अकादमी में उनके साथ रहे हमारे मित्र आदिब अदीब ने सूचना दी-'भानावतजी, कहां हो! हम अशोकनगर श्मशान में हैं। ओंकारश्री चल बसे।' मैं सुनते ही धक् रह गया। फटाफट जैसा था वैसा पहुंचा। वहां से नंदबाबू को फोन किया तो बोले-'कहां से बोल रहे हो?' मैंने कहा-'अशोकनगर श्मशान से, ओंकारश्री नहीं रहे।' वे बोले-'मैं अहिंसापुरी श्मशान से बोल रहा हूं। विश्वंभर नहीं रहे।' मेरी आंखों में काला-पीला छा गया। कुछ क्षण के लिए महसूस किया जैसे मेरे नीचे से धरती खिसक गई है।

यंग इंडिया के सम्पादक डॉ. विश्वंभर के चाचा-बेटा-भाई हरिशंकर व्यास ने 18 नवम्बर 2013 के यंग इंडिया में लिखा- 'पुरुषोत्तमजी के विश्वंभर व्यास की रही जीवनयात्रा वैयक्तिक, एकांगी, संघर्ष की गजब दास्तां है। उनका निज जीवन निज ही रहा। अपना स्वभाव भी लोगों की निजता में दखल नहीं देने का है। नाते-रिश्तेदारी के प्रपंचों से दूर रहने का है और अपना खुद क्योंकि अकेले चले हैं, अपने बूते बने हैं इसलिए अपन यह मानते रहे कि जो जैसा जी रहा है वह वैसा जिए। अपन को क्या लेना-देना।

वे सत्तर साल की उम्र में भी जिंस पहनकर घूमने निकल जाया करते थे। एक मस्त मौला, स्वाभिमानी मगर सौ टका निजता के आग्रह वाले व्यक्तित्व के जो उतार-चढ़ाव देखे हैं उन्हें वे विस्मृत कर पाये और वेदना से उबर पाये, यह नामुमकिन है। उनकी मित्र मंडली में उदयपुर के साहित्यकार, चित्रकार कई थे। टखमण, युगधारा जैसी संस्थाओं से उनका सरोकार रहा तो नंदबाबू, महेन्द्र भानावत आदि के साथ खूब संसर्ग रहा। एक बहुरंगी अर्थ लिये हुए थे डॉ. सा.!'

प्रतिभावान बालिकाओं को लेपटॉप व स्कूटी

उदयपुर। गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया के फतह सी. सै. स्कूल में आयोजित समारोह में 250 प्रतिभावान बालक-बालिकाओं को लैपटॉप तथा सामान्य वर्ग की 12 एवं जनजाति वर्ग की 168 बालिकाओं को स्कूटी वितरण की। इस मौके पर गृहमंत्री ने कहा कि प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने से निश्चय ही इसका लाभ राज्य में व्यापक स्तर पर मिल रहा है।

एयरपोर्ट पर विजय स्तंभ का उद्घाटन

उदयपुर। मेवाड़ के शौर्य, वीरता और बलिदान को प्रदर्शित करते चित्तौड़गढ़ के विजय स्तंभ की तर्ज पर बनी प्रतिकृति मेवाड़ के ऐतिहासिक इतिहास को जीवंत कर देगी। ये विचार अभिनेता और महाभारत सीरियल में दुर्योधन बने पुनीत इस्सर ने

महाराणा प्रताप एयरपोर्ट डबोक पर मिराज ग्रुप की ओर से निर्मित विजय स्तंभ के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। प्रतिकृति का उद्घाटन पुनीत इस्सर, मिराज समूह के एमडी मदन पालीवाल, महाराणा प्रताप हवाई अड्डा प्राधिकरण के निदेशक विमानपत्तन कुलदीपसिंह ऋषि एवं सीआईएसएफ उदयपुर एयरपोर्ट के प्रमुख जी.एम. अंसारी ने किया।

इस प्रतिकृति को गुड़गांव के नरेश कुमावत द्वारा निर्मित किया गया है। न्यूयार्क में बने स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी की तरह टावर ऑफ विक्ट्री मेवाड़ की शान है। रात्रि में यह स्तंभ रोशनी से जगमगाएगा। एयरपोर्ट पर इसकी रेप्लिका बनाने का मकसद सौंदर्यीकरण बढ़ाने के साथ ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करना भी है। 30 फीट ऊंचा यह विजय स्तंभ एयरपोर्ट परिसर के बाहर की ओर 18 मीटर परिक्षेत्र में बनाया गया है।

ओल्ड ब्रिज ने मैकपावर सीएनसी में हिस्सेदारी खरीदी

उदयपुर। राजकोट स्थित मैकपावर सीएनसी मशीन्स लि. (मैकपावर/कंपनी) के प्रस्तावित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम में एंकरों का हिस्सा (एंकर पोर्शन) खुला और इसे सेबी पंजीकृत बंद अवधि वाले कैटेगरी एआइएफ, ओल्ड ब्रिज के वैंटेज इक्विटी फंड द्वारा सब्सक्राइब किया गया। ओल्ड ब्रिज कैपिटल-वैंटेज इक्विटी ने कंपनी में एंकर निवेशक के तौर पर 10 करोड़ रूपये निवेश कर 7.28 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी। कंपनी ने एचएसबीसी म्यूचुअल फंड के साथ 5.35 करोड़ रूपये का आइपीओ-पूर्व प्लेसमेंट भी सफलतापूर्वक पूरा किया और एचएसबीसी एमएफ ने आइपीओ पूर्व प्लेसमेंट में कंपनी में 3.24 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी। वैश्विक एसेट मैनेजमेंट कंपनी ने एक बार फिर अपने पोर्टफोलियो में एसएमई स्टॉक के इस नये संकलन के साथ सबका ध्यान आकर्षित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम आयोजित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक जावर माइंस में सखी उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया किया, जिसमें 3000 से अधिक 'सखी' महिलाओं, कर्मचारियों एवं जिंक परिवार की सदस्यों ने भागीदारी की। शुभारंभ मुख्य अतिथि उपवन संरक्षक आर. के. जैन, जावर माइंस साइट प्रेसीडेंट राजेश कुण्डु एवं मंजरी फाउंडेशन के निदेशक मंडल सदस्य यतीश यादव ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया।

कार्यक्रम में सखी महिलाओं ने रस्सा कस्सी, कुर्सी रेस, बाल्टी में बॉल, रंगोली, चम्मच रेस और मटकी फोड़ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इस मौके पर सड़क सुरक्षा पर नाटक प्रस्तुत करने के साथ ही ग्रामीण महिलाओं द्वारा गीत, नृत्य के माध्यम से कुरीतियों को दूर करने और महिला सशक्तिकरण बढ़ाने का संदेश दिया।

हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि जिंक अपने आसपास के क्षेत्र की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये कटिबद्ध है। सखी कार्यक्रम से जुड़ कर उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, अजमेर, चित्तौड़गढ़ एवं उत्तराखण्ड के पंतनगर की महिलाएं आत्मनिर्भर होने की ओर अग्रसर है। हिन्दुस्तान जिंक के 1237 सखी समूहों से जुड़कर 14421 महिलाएं लाभान्वित हो रही है।

खेल व फिटनेस में नाम रोशन करने वाली 50 प्रतिभाएं सम्मानित

उदयपुर। मेहनत, लगन और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने हौसलों के दम पर जिन बेटियों ने खेल और फिटनेस जगत में उदयपुर का नाम पूरे विश्व में रोशन किया, उनका अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्थान चिक्स कनेक्ट की ओर से सम्मान और अभिनंदन किया गया।

चिक्स कनेक्ट की फाउंडर हुर्रतुल मलिका ताज ने बताया कि चिक्स कनेक्ट अवार्ड फॉर विमेन इन स्पोर्ट्स एंड फिटनेस में बालिकाओं, युवतियों और महिलाओं का सम्मान किया गया जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीते व कई नए कीर्तिमान रचे। ये महिलाएं पूरे समाज और खासतौर पर बेटियों के लिए रोल मॉडल व प्रेरणा का स्रोत बन गईं। नारी शक्ति के अभिनंदन के समारोह में 50 प्रतिभाओं को अतिथियों ने सम्मानित किया।

रॉकवुड स्कूल के साझे में रेडिसन होटल में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि एथलीट हमीदा बानू थीं। इसके अलावा समारोह में जिम्नास्टिक सुरेखा राना, फिटनेस स्वर्णिम मेथानी, सीपीएस स्कूल के डायरेक्टर दीपक शर्मा, अलका शर्मा, अंतर्राष्ट्रीय पावर लिफ्टर माला सुखवाल, मार्शल आर्ट्स राज मेनारिया, रॉकवुड्स की नीरू टंडन, बॉक्सिंग के अर्जुन पालीवाल आदि थे। कार्यक्रम के फिटनेस पार्टनर विन्दीप फिटनेस थे। पिंक्स एंड पिचेज उदयपुर, आईएनआईएफआई का भी सहयोग रहा।

सम्मान समारोह में सेल्फ डिफेंस कार्यक्रम के दौरान रॉकवुड्स की छात्राओं की जिम्नास्टिक के अद्भुत प्रदर्शनों ने सबको चकित कर दिया। छात्राओं ने अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित योगाभ्यास करने व फिटनेस के मंत्र दिए। लोकनृत्य व लोकसंगीत की प्रस्तुतियों पर प्रतिभागी और दर्शक झूम उठे।

कान्यो-मान्यो

ब्याव रो टोटको

काल एक ब्याव रे रिसेप्सन मांय गयो जदी मंच माथै लाड़ा-लाड़ी वातां कर‍्या। मूं अचम्बा में पड़्ग्यो के दन एक नी हुवो ने ई सबां रे सामे मुळकाय रिया है। कान्यो री या वात सुण मान्यो मुंडो खोल्यो, बोल्यो कै दादा भाई थां कस्या जमाना में जी‍र्‍या हो। सतजुग मांय पोंचग्या हो जठै सीताजी सीलवंता हा। यो कलजुग है।

यां नै धनवाद दो कै ओढ़ण-पैरण तो यांरो पूरो है। थोड़ा दन ढब जावो। पछै अणी लाड़ी नै देखजो। गाबा बोझ लागैला। अणी उछव में जतरी लुगायां आई, नजरां दौड़ावो। ठंड री कंपकंपी मांय भी कोई लुगाई आपणै माथा पै साड़ी नी नाक मेली। पूरो पैरण नी पैर मेल्यो है।

कान्यो होच में पड़्ग्यो। बोल्यो, मान्या थारो केणो तो ठीक है पण या सब लीला देख म्हांणो तो जीव घबरावे। पैली आपणी लुगायां सूं दनै कोई वात नी करतो। अबै तो लपलपो चालग्यो। वगर बोल्यां रै नी सके। मां-बाप यांरा मुंडा देख मन-ई-मन कुराबू करै। केवा रो जमानो नी र‍्यो। मान्यो बोल्यो, पैली ब्याव माथै लुगायां गीतां मांय बालकी ने सीख देती- 'धरम तुमारा ए नार, पति की सेवा करना।' कान्यो बोल्यो, अबै सीख रा टोटा पड़्ग्या तो बालक्या खोटा पड़्ग्या।

कान्यो बोल्यो, असी वात नी है। समै बदलग्यो। वणी गीत ने सुण। आगे रा बोल है- 'लाड़ी ऊना पाणी करणा, पति को बैठ नलाणा, दै-दै मोरां हाथ। लाड़ी ऊना सा भोजन करना, पति को बैठ जीमाना, कर-कर के मनवार।'

मान्यो बोल्यो, अबै आया दन होटलां में रसोई अरोगे। नवा-नवा स्वाद पैदा वेइग्या। रसोड़ो खावा नै दोड़ै। वगत-वगत री वातां है। दोई वातां में डूबग्या। अतराक में वांनै रोड़्यो भाईलो आवतो दीख्यो। तीनी गले मिल्या। सुख-दुख री वातां कीधी।

दोयां री वातां सुण रोड़्यो बोल्यो, देखबू करो। आंख्यां मींच लो। सोरो रेवणो वै तो गाबड़सींच बण्या रो। काल रा जी लाड़ी-लाड़ी थां देख्या वी पैलीऊं एक-दूजा ने जाणता, हेलमेल सूं रेता आया। इनै लव मेरीज केवै। ढंग सूं रेवेगा तो गाड़ो चाल जाई नी तो लव उल्टो पड़ वल वे जाई। लव अफेयर ने मां-बाप नीं जाण सक्या। वो उछव अफेयर माथै फेयर रो ठप्पो हो। 'जै चारभजा री' रामासामी कर रोड़्यो चालतो बण्यो। कान्यो-मान्यो दोई वींरो मुंडो ताकता रेइग्या। लागै ब्याव एक टोटको हो।

पीआईएमएस में ट्रिपलेट का जन्म

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में एक महिला ने सिजेरियन ऑपरेशन द्वारा तीन स्वस्थ कन्याओं को जन्म दिया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि घाटोल, बांसवाड़ा निवासी रीना पत्नी संजय राज ने पीआईएमएस में सिजेरियन ऑपरेशन द्वारा तीन स्वस्थ कन्याओं को जन्म दिया। आपरेशन डॉ.प्रदीप भटनागर और टीम द्वारा किया गया।

विद्यापीठ दीक्षांत समारोह में डॉ. गुलाब कोठारी को डी.लिट्

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विवि के दीक्षनत समारोह में राजस्थान पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. गुलाब कोठारी को डी.लिट् की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. कोठारी ने कहा कि पूरा जीवन पाठशाला है और हर दिन एक कक्षा है जहां जीवन से जुडी कई परिस्थितियां सामने आती हैं। वर्तमान में प्राप्त डिग्रियां सिर्फ नौकरियों के ही काम आती हैं। जब हम स्कूल-कॉलेज में थे, तब पढ़ने में मन नहीं लगता था, लेकिन आज जब तक हम कुछ पढ न लें तब तक हमारा खाना ही हजम नहीं होता है।

कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने बताया कि समारोह में 130 छात्र-छात्राओं को पीएच.डी. की उपाधि से नवाजा गया, जबकि 84 को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए। डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि हर शिक्षण संस्था छात्र के लिए मातृसंस्था होती है जहां छात्र ज्ञान-दुग्ध अर्जित कर मनस्वी बनता है।

पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी नहीं रहे

पट्ट चित्र पड़ याकि फड़ के चित्रांकन कलाकार श्रीलालजी जोशी का 90वें जन्म दिन, 2 मार्च को निधन हो गया। पहलीबार 1959 में खोज यात्रा के दौरान भीलवाड़ा में उनके जोशी कला कुंज में मिला था। फिर तो अनेकों बार उनके घर, मेरे घर, भारतीय लोककला मण्डल में तथा अन्यत्र शिल्पोत्सवों में उनसे लगातार मेरी भेंट होती रही।

उन दिनों उन्होंने पड़ चित्रण का कार्य छोड़ सिनेमा विज्ञापन तथा दुकानों पर लगने वाले बोर्ड बनाना शुरू कर दिया था। देवीलाल सामरजी को स्थिति से अवगत कराया तो उनके साथ भी गया। उन्हें कहा कि अपने पुरखों की समृद्ध धरोहर जीवित रखें नहीं तो इस कला का अनर्थ हो जायेगा। मैं रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत को लेकर भी गया जो बगड़ावत पर कार्य कर रही थीं। उनके लिए जोशीजी ने पूरी देवनारायण की पड़ बनाई।

फिलाडेल्फिया के जो मिलर को मैं कई जगह ले गया। श्रीलालजी के वहां भी वे महीना भर रहे। उनसे पड़ें बनवाई और फिर पुस्तक भी लिखी। मैंने 1968 में 'रामदला की पड़' पुस्तक लिखी जिसमें पड़ कला के उत्स से लेकर घराने, कलाकार, चितेरे, वाचक, भोपे आदि पर लिखा।

सन् 2000 में मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद भोपाल ने मेरी 'पाबूजी की पड़' पुस्तक छापी। 'देवनारायण रो भारत' भारतीय लोककला मंडल से छपी। श्रीलालजी से निरन्तर पत्रों द्वारा भी बहुत सी जानकारी लेता-देता रहा। एक बार मैंने उनसे कहा कि मुझे अपने बही भाट से मिलायें ताकि मैं पूरी वंशावली प्राप्त कर सकूं। वे मुस्कान भरे बोले-

'आपके पास जितनी जानकारी है, किसी के पास नहीं है। आप तो बही भाटों के भी भाट हैं।'

श्रीलालजी की यह विशेषता रही कि वे पड़-चित्रण की विपुल एवं विशद जानकारी रखते थे। उन्होंने कई प्रयोग कर पड़ शैली में 'मूमल महेन्द्र', 'पृथ्वीराज संयोगिता', 'ढोलामारू', 'रानी पद्मिनी का जौहर', 'हल्दीघाटी' जैसे अति लोकप्रिय लोकाख्यानों पर पड़ें चित्रित कीं। धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि-कीर्ति फैलती रही। कई विदेश यात्राएं, कई ख्यात संग्रहालयों, हवेलियों, होटलों, इमारतों तथा कला केन्द्रों की दीवालों पर उन्होंने पड़-चित्रण किया। उन्हें पद्मश्री मिली और अकल्पनीय अर्थ-यश मिला।

मैं जब भी मिलता, पुरानी स्थिति की याद दिलाता और उनके भाग्य की सराहना करता। वे जब भी मिलते, अपनी पिछली विगत सुनाते- कहां-कहां से लोग आए, उन्होंने क्या-क्या, कहां-कहां, किनके लए चित्रण किया, कहां-कहां उनका सम्मान अभिनंदन हुआ, कौन-कौन सीखने आये, किस-किसने उनके साथ फोटू पड़वाया, भोजन किया।

कहते -बहुत कुछ तो विदेशियों से भी सीखने को मिलता है और दुहराते- यदि भारतीय लोककला मण्डल, सामरजी और आप लोग नहीं होते तो हमारी पड़ें कभी की पौं बोलती होतीं।

अब जब वे नहीं हैं, उनके साथ की बहुत सारी ढेरों यादें मुझे घेरती लग रही हैं। वे सरल चित्त के, निरभिमानी, अपने पराये को समझने वाले, सहृदय कलाकार थे। अपनी कलमकारी से उन्होंने न केवल मंदी पड़ती पड़कारी का संरक्षण किया अपितु युगानुरूप नये प्रयोग कर पूरे विश्व में उसकी प्रस्थापना दी। वे पड़ कला के सर्वोच्च शिखर पर आसीन युगान्तरकारी पुरुष थे जिन्होंने अपने काम से अपने नाम को सार्थक कर श्री-लाल किया। - म.भा.

विशिष्ट विभूतियों को महाराणा मेवाड़ सम्मान

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन, के 36वें वार्षिक अलंकरण समारोह में अध्यक्ष श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने कहा कि फाउण्डेशन को संसार भर के गुणीजनों के सम्मान में अपनी आस्था का दीपक जलाए रखने में ही परम सुख मिलता है। समारोह की अध्यक्षता बालकवि बैरागी ने की।

समारोह में कोलम्बिया युनिवर्सिटी के प्रो. जॉन स्ट्रेटन हावले को दो लाख का अन्तर्राष्ट्रीय कर्नल जेम्स टॉड सम्मान प्रदान किया गया। एक-एक लाख के राष्ट्र स्तरीय सम्मान में द हिन्दू की राजनयिक सम्पादक सुहासिनी हैदर को हल्दीघाटी सम्मान, 'मेट्रो मेन' के नाम से प्रख्यात डॉ. ई श्रीधरन को हकीम खाँ सूर अलंकरण, हर्बल मेन गफ्फारभाई कुरैशी को महाराणा उदयसिंह सम्मान, बस ड्राइवर सलीम गफूर शेख एवं हर्ष देसाई को पन्नाधाय सम्मान प्रदान किया गया।

इसी तरह राज्य स्तरीय सम्मान में महाराणा मेवाड़ सम्मान आबिद सूरती, रसप्रीत सिद्धू, सत्यव्रत शास्त्री, महर्षि हारीत राशि सम्मान डॉ. संदीप जोशी एवं डॉ. चन्द्रकांत पुरोहित, महाराणा कुम्भा सम्मान देवकिशन राजपुरोहित, महाराणा सज्जनसिंह सम्मान अभिषेक जोशी, डागर घराना सम्मान प्रशांत एवं निशांत मलिक, राणा पूंजा सम्मान श्रीमती वरदी बाई, अरावली सम्मान मिहिर सोनी एवं हिमांशु लाम्बा को प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक को 51 हजार की राशि प्रदान की गई।

इसी प्रकार राज्य का सर्वश्रेष्ठ पुलिस थाना पुरस्कार पुलिस थाना मकबरा जिला कोटा को प्रदान किया गया। भामाशाह अलंकरण से वर्ष 2017 के 23 विद्यार्थियों को तथा महाराणा राजसिंह अलंकरण से 17 विद्यार्थी को 11,001/- रु. की सम्मान राशि एवं महाराणा फतहसिंह अलंकरण से 76 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को 5001 रू. की सम्मान राशि, पदक और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

समारोह में प्रो. हावले ने शुद्ध हिन्दी में उद्‍बोधन देकर दर्शकों में रोमांच भर दिया। समारोह के अध्यक्ष बालकवि बैरागी ने होनहार विद्यार्थियों का अद्‍भुत उदाहरण देते हुए उनसे प्रेरणा लेकर जीवन में निराशाओं को समाप्त करने की प्रेरणा दी। प्रवक्ता पंडित नरेन्द्र मिश्र ने ओजस्वी कविताओं का पाठ किया। धन्यवाद की रस्म ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने अदा की। संयोजन मयंक गुप्ता तथा संचालन रूपा चक्रवर्ती एवं गोपाल सोनी ने किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।